बसवेश्वर

एच. थिप्पेरुद्रस्वामी

MT
891.481 415
B 29 T

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
891.481 415
B29T

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

बसवेश्वर

बस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओहि दृश्यकेँ देल गेल अछि जाहि मे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक मायरानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचा मे एक गोट देवान जी बैसल छथि जे ओहि व्याख्या केँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

बसवेश्वर

लेखक

एच. थिप्पेरुद्रस्वामी

अनुवादिका

अणिमा सिंह

साहित्य अकादेमी

Basavesvara : Maithili translation by Anima Singh of H. Thipperudra-swamy's monograph

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Library IIAS, Shimla Delhi (1989)
MT 891.481 415 B 29 T
00117162

©साहित्य अकादेमी

MT
891.481 415
B 29 T

प्रथम संस्करण : 1989

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :

रवीन्द्र भवन, 35, फीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

प्रादेशिक कार्यालय :

ब्लाक V-बी रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700 029
29, एलडाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रंथसंग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Indian Institute of Advanced Studies
117162
10.12.04
SHIMLA

मुद्रक :
मित्तल प्रिण्टर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

सूची-पत्र

1.	जीवन कथा	7
2.	भक्ति-भण्डारी	16
3.	एक क्रान्तिकारी सन्त	27
4.	कायक क सन्देश	39
5.	एक महान कवि	48
	चुनल ग्रन्थ-सूची	59

1

जीवन-कथा

मानवीय समस्या सभ आइ पहिने सँ बेसी जटिल अछि। मानव निस्सन्देह अभूतपूर्व ज्ञान एवं शक्ति प्राप्त कैने अछि, मुदा ओ अनुपम परिवर्तन उत्पन्न क' देने अछि जाहि कारणें अस्त-व्यस्त जीवन आरो बेसी अस्त-व्यस्त भ' गेल अछि। हमरा सभ सँ जुड़ल प्रत्येक वस्तु प्रवाह क स्थिति मे अछि। एहि अवस्था मे आध्यात्मिक उपचार क आवश्यकता हमरा लोकनिक इतिहास मे पहिलु क अपेक्षा आइ बेसी प्रखरतापूर्वक अनुभूत भ' रहल अछि। प्रतिदिन क नीरस वातावरण क गतानुगतिकता सँ अपना कें मुक्त करबा मे हमरा सम कें जाहि आध्यात्मिक बलक आवश्यकता पड़ैछ ओकरा प्राप्त करबाक विधि विश्वक महान सन्त एवं कवि लोकनियेटा सिखा सकैत छथि। कर्नाटक क बसवेश्वर अथवा बसवण्णा एक सन्त, कवि एवं समाज-सुधारक छलाह। हुनक गणना भारत क महान आध्यात्मिक शिक्षक लोकनि मे होइत अछि।

आधुनिक भारत मे धार्मिक जागृति और सामाजिक परिवर्तन क सन्दर्भ मे बसवेश्वर क सन्देश एक विशेष महत्त्व प्राप्त क' लैत अछि। आजु क भारतीय समाज, अपन प्रजातंत्र एवं राष्ट्रीयता क विचार तथा अपन शिक्षा-प्रसार एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर जोर दैत अपन स्वरूप कें बदलि रहल अछि। ई विश्वक प्रमुख विचार-धारा सँ प्रभावित अछि। हमरा सभक विचारादर्श एतेक व्यापक रूप सँ बदलि रहल अछि जे हमरा सभक कतिपय प्राचीन मूल्य, स्थापना एवं रीति, जाति, आस्था एवं कर्मकाण्ड तथा अन्धविश्वास क लेल जीवित रहब असम्भव प्रतीत होइछ। बसवण्णा आठ सए वर्ष पूर्व भेल छलाह, मुदा ओ हमरा सभ कें पूर्ण रूप सँ आधुनिक और व्यावहारिक रूप मे आकर्षित करैत छथि एवं एही लेल हुनक शिक्षा आइयो संगत अछि। यदि ओहि शिक्षा क अनुसरण कैल गेल रहतिहैक त' भारतीय समाज क चित्र आइ बहुत भिन्न रहैत। अपन धर्म क मूल मे बसवण्णा स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द एवं गाँधा जी सन अनेक आधुनिक भगवद्दूत (पैगम्बर) लोकनिक पूर्वाभास उपस्थित कैने छथि। हुनका

मात्र कर्नाटक क नहि प्रत्युत समस्त भारत क नव युग क भगवद्दूत कहल जा सकैत अछि।

हुनक जीवन-कथा क अध्ययन आरम्भ करबा सँ पूर्व हुनक समकालीन धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थिति तथा राजनीतिक स्थिति पर विचार क' लेब सहायक हैत।

इतिहासक प्रारंभिक कालहि सँ कर्नाटक अपन मनक द्वार विश्वक समस्त धर्म क लैल मुक्त रखलक अछि। पुरालेखीय प्रमाण सँ स्पष्ट अछि जे ईसाइ युगक बहुत पूर्वहि आर्यधर्म सम्पूर्ण देश कें प्रभावित क' लेने छल। एकरा राजकीय संरक्षण प्राप्त छलैक। ई प्रतीत होइछ जे एहि हिन्दू धर्म क संगहि संग प्राचीन कर्नाटक में पूजा क स्थानीय रूप जेना सर्प-पूजा, वृक्ष-पूजा अथवा अन्यान्य देवी-देवता क पूजा आदि प्रचलित छल।

एकर पश्चात् जैन एवं बौद्ध धर्म क आविर्भाव भेल। मुदा बौद्ध धर्म एहि ठाम उत्तर भारत जकाँ स्थापित एवं जनप्रिय कहियो नहि भ' सकल। जैन धर्म क तुलना मे ई शीघ्र ह्रासोन्मुख भ' गेल। जैन धर्म कें कर्नाटक पर राज करैवला सभ प्रमुख राजवंश क संरक्षण प्राप्त छलैक। ताहि हेतु कर्नाटक क संस्कृति मे एकर योगदान अधिक महत्त्वपूर्ण अछि।

बारहम शताब्दी सँ जैन धर्म क अवनति आरंभ भ' जाइछ। आठम शताब्दी क आस-पास कोनो समय मे दक्षिण भारतीय क्षितिज पर एक विराट व्यक्तित्व क उदय होइछ। ओ छलाह शंकराचार्य। केरल मे जन्म ल' कए ओ समस्त भारत क भ्रमण कैलन्हि। ओ अद्वैत मत क उपदेश देलन्हि एवं वैदिक धर्म क नवीनीकरण कैलन्हि। ओ अपन पहिल मठ कर्नाटक क शृंगेरी मे स्थापित कैलन्हि।

कर्नाटक मे प्राचीनतम एवं सर्वाधिक व्यापक रूप में स्वीकृत धर्म छल शैववाद। एहि मे अनेक सम्प्रदाय छल, यथा, पाशुपत, कालमुख एवं कापालिक। कश्मीर और तमिल क शैववाद सेहो कर्नाटक मे प्रविष्ट भेल तथा शैव सम्प्रदाय कें बहुत दूर धरि प्रभावित कैलक। कतिपय कालमुख शिक्षक एवं धार्मिक मठ क प्रमुख लोकनि महान विद्वान छलाह एवं ओ लोकनि कर्नाटक मे बड़ जनप्रिय छलाह।

बारहम शताब्दी क आरम्भ में रामानुजक आगमन भेल जे विशिष्टाद्वैत क प्रचार कैलन्हि। ओ तमिलनाडु एहि लेल छोड़लन्हि जे स्थानीय चोल राजा द्वारा वैष्णव क उत्पीड़न भ' रहल छल। अपन स्वतंत्रता क परम्परा क अनुसार कर्नाटक हुनक स्वागत ओहिना कैलक जेना पहिने शंकर क कैने छल। होयसल राजा विष्णुवर्धन हुनक शिष्य भ' गेलाह। तहिया सँ जैन धर्म क प्रभाव क्षीण होमय लागल। वैदिक धर्म अपना कें पुनः दृढ़तापूर्वक स्थापित कैलक।

मुदा एहि समय धरि आबि कए शंकर एवं रामानुज सन आचार्य लोकनिक शिक्षा क उपरान्तो वैदिक धर्म बिगड़ि कए कट्टर तथा अनमनीय मतान्धताक रूप धारण क' लेने छल। साम्प्रदायिक रूढ़ि क समुच्चय उपनिषद क गौरवमय दर्शनहु कें धूमिल क' देने छल। अन्धविश्वास एवं अर्थहीन तथा रूढ़ कर्मकाण्ड सँ समाज परजीवी समुदाय क रूप धारण क' लेने छल। बलि-प्रदान वला उपासना-पद्धति व्यापक रूप मे प्रचलित भ' गेल छल।

आरंभ मे जावत धरि लोक कें चतुर्वर्ग प्रणाली क सदुद्देश्य क भावना क समुचित अवबोध रहलैक तावत धरि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र क रूप मे समाज क चतुष्पक्षीय विभाजन सँ अवश्ये लाभ भेल हेतैक। मुदा आगाँ चलि कए एकरे कारणें समाज खंडित भ' गेल, भ' सकैछ अपन मूल रूप मे ई सामाजिक एकात्मकता क एक सिद्धान्त रहल हो, मुदा अन्ततोगत्वा एकर अवसान ह्रासोन्मुख जाति-प्रथा मे भ' गेल। एहि घृणित प्रथाक सारभूत सिद्धान्त जन्म पर आधृत विभाजन अछि जाहि सँ एकता क समस्त विचार विनष्ट भ' गेल अछि।

उच्च वर्ग एव शूद्र क मध्य तीव्र भेद-भाव कैल जाइत छल तथा शूद्र कें असंख्य उपजाति और उपसमुदाय मे विभाजित क' देल गेल छल। धर्म किछु विशेष सुविधा प्राप्त लोग सभक एकाधिकार बनि गेल छल। शूद्र एवं महिला लोकनि कें वैदिक ज्ञान सँ वंचित राखल गेल। समस्त धर्मग्रन्थ क लेखन एवं प्रतिपादन एहि दृष्टिकोण क समर्थन मे कैल गेल छल। एहि प्रकारें सामाजिक अन्याय पर धार्मिक स्वीकृति क मोहर लागि गेल। एकरा संगहि छुआछूत क अपकीर्ति सेहो जोड़ि देल गेल छल। अछूत क दशा दयनीय छल। ओकरा संग पशुओ सँ बत्तर व्यवहार कैल जाइत छल। हिन्दू समाज अपन समस्त उच्च संस्कृतिक परम्परा एवं आध्यात्मिक वैभव क उपरान्तो जनसाधारण क आकांक्षा एवं आवश्यकता कें पूर्ण करबा मे सर्वथा असफल भ' गेल छल। आवश्यकता क एहि मुहूर्त मे घटनास्थल पर बसवेश्वर क आविर्भाव भेल।

सन्त बसवेश्वर क ऐतिहासिक सामग्री पर आधृत विश्वसनीय जीवनी एखन धरि तैयार नहि भेल अछि। हुनक जीवनीक पुनःकल्पन हेतु महत्त्वपूर्ण स्रोत सभ मे समकालीन शिलालेख, धार्मिक साहित्य यथा वीर शैव लेखक लोकनिक द्वारा रचित पुराण बसवण्णा क अपन एवं चन्नाबसवण्णा, अल्लाम प्रभु, सिद्धरामे, अक्का महादेवी और अनुभव मंडप क आन सदस्य लोकनिक उक्ति आदि सम्मिलित अछि।

सौभाग्यवश, बसवण्णा सँ सम्बन्धित दू गोट शिलालेख क अनुसंधान भेल अछि। बसवण्णा क जीवन सम्बन्धी किछु विवरण क विश्वसनीय प्रमाण क रूप मे ओकर मूल्य असीम अछि। समस्त वीर शैव कृति सभ मे कन्नड़ क 'बसव

राजदेवर रगले' तथा तेलगू क 'बसव पुराण' बड़ महत्त्वपूर्ण अछि, कियैक त एकर लेखक क्रमशः हरिहर और पालकुरि क सोमनाथ बसवण्णा क प्रायः समकालीन छलाह। भीम कवि क 'बसवपुराण' लक्केना डण्डेसा क 'शिवतत्त्व चिन्तामणि' एवं सिंगिराज क 'सिंगिराजपुराण' क रूप मे विख्यात 'अमलावसव चरित्र' पर सेहो विचार कएल जा सकैछ। हुनक विचार इतिहास लिखवाक नहि प्रत्युत भक्तिभाव पूर्वक बसवण्णा कें देवता बनबैत हुनक गौरव-गाथा गैबाक छल। मुदा तैयो एहि कन्नड़ कृति सभ क ध्यानपूर्ण अध्ययन हमरा लोकनि कें किछु ऐतिहासिक तथ्य क निर्णय मे सहायता प्रदान करत ! एहि ठाम एक संक्षिप्त जीवन-चरितात्मक शब्द चित्र प्रस्तुत करबाक प्रयत्न कैल गेल अछि। एकर आधार समस्त उपलब्ध स्रोत अछि एवं विवादास्पद विवरण कें छोड़ि देल गेल अछि।

बसवण्णा क जन्म एक उच्च ब्राह्मण परिवार मे (आजुक कर्नाटक क बीजापुर जिलान्तर्गत) इंगालेश्वर बगेवाडी नामक स्थान पर सन् 1131 ई० क आसपास भेल छल। हुनक पिता मदिराज अथवा मदारस बगेवाडी अग्रहार क प्रधान छलाह एवं 'ग्रामनिमानी' क नाम सँ प्रसिद्ध छलाह। हुनक पत्नी मदालम्बी वा मंदावि एक धर्मनिष्ठ महिला छलीह एवं बगेवाडी क प्रमुख देवता नन्दीश्वर क महान भक्त छलीह। बसवण्णा हुनक तेसर सन्तान छलाह। बसवण्णा क एक जेठ भाय छलाह जिनका देवराज एवं एक जेठ बहिन छलीह जिनका नागम्मा कहल जाइत छल। ई दुनू बाद मे बसवण्णा क धार्मिक और सामाजिक गतिविधि मे सक्रिय भाग लेलन्हि।

बसवण्णा क जन्म होइतहि जटावेद मुनि नामक एक शैव साधु जे ईशान्य गुरु सेहो कहबैत छलाह कूडल संगम सँ एक प्रतीकात्मक लिंग क संग हुनका आशीर्वाद देबा लेल एवं नवीन पथ मे दीक्षित करबा लेल उपस्थित भेलाह।

बालक क रूप मे सेहो बसवण्णा महानता एवं वैयक्तिकता क लक्षण प्रदर्शित कैलन्हि। ओ स्वतंत्र विचार धारा संयुक्त एक अकाल प्रौढ़ बालक छलाह। पारम्परिक ब्राह्मण परिवार में जन्म ल' कए हुनका अपन घर एवं पड़ोस मे ओहि धार्मिक अनुष्टान एवं कठोर रूढ़ि सभ पर विचार करबाक अक्सर भेंटलन्हि जकर रूढ़िवादी लोकनिक द्वारा सतर्कतापूर्वक पालन भ' रहल छल। ओ देखलन्हि जे धर्मक नाम पर मनुष्य एवं मानव मन पर अंधविश्वास तथा रूढ़ सिद्धान्त सभक अधिक प्रभाव अछि। मन्दिर सेहो शोषणक केन्द्र भ' गेल अछि। युवा बसव एहि सभ विषय पर चिन्तन कैलन्हि।

ओ आठ वर्षक अवस्था मे अपना जीवन क पहिल संकट क सामना कैलन्हि। जखन ओ देखलन्हि जे माता-पिता हुनक यज्ञोपवीत या दीक्षा संस्कार क तैयारी क' रहल छथि ओ ओकर दृढ़तापूर्वक विरोध कैलन्हि। हुनक तर्क ई छल जे दीक्षा

तं जन्मक संगहि लिंग क संग भ' चुकल अछि। जखन हुनक पिता आग्रह कैलथिन्ह जे हुनका ई संस्कार अवश्य स्वीकार करै पड़तन्हि तखन ओ माता-पिता क घर छोड़ि कए कूडल संगम चलि गेलाह।

हरिहर एहि घटना क किंचित् भिन्न वृत्तान्त प्रस्तुत कैलन्हि अछि। हुनक कहब छन्हि जे संस्कार सम्पन्न भेल आ जखन बसव सोलह वर्षक भेलाह ओ यज्ञोपवीत परित्याग कैलन्हि एवं घर छोड़ि कें कूडल संगम चलि गेलाह। मुदा आन लेखक लोकनि एकमत छथि जे संस्कार सर्वथा असम्पन्ने रहि गेल। अतएव एतवा तं स्पष्ट अछि जे ओ अपन उपनयन एवं ओकर पालन क प्रश्न पर समझौता नहि क' सकलाह, कियैक तं उपनयन जातिगत धर्मतन्त्र क एक प्रतीक मात्र बनि कें रहि गेल छल। लिंग धारण कें ओ जाति क संकेत नहि मानैत छलाह, प्रत्युत उपासनाक एक साधन मात्र। जाति, पंथ वा योनि क कोनो भेद-भाव बिना कोनो व्यक्ति एकरा धारण क' सकैत छल।

एहि प्रकारें ओहि प्रारम्भिक अवस्था मे हुनका ई ज्ञात भ' गेल छलन्हि जे शिव क सार्थक प्रतीक धार्मिक एवं सामाजिक समता क प्रचार क एक सशक्त साधन भ' सकैत अछि। अतः ओ वीरशैववाद क दिसि आकर्षित भ' गेलाह। एहि संप्रदाय मे शरीर पर लिंग धारण के दीक्षाक सूत्रपात मानल जाइत छल। संगम क निवास हुनक विचार कें एक नव जीवन-शक्ति एव हुनका एक नव दृष्टि प्रदान कैलक।

कूडल संगम कृष्णा नदी एवं ओकर सहायक मलप्रभा नदीक संगम पर स्थित अछि। ओहि समय मे ई ज्ञान क महान केन्द्र सभ मे एक छल। बसवण्णा अपन बाल्यकालहि मे संगम क माहात्म्य क विषय मे बहुत किछु सुनि चुकल छलाह। सम्भवतः ओ एहि पवित्र स्थान पर पहिनहु आयल छलाह। इहो स्मरणीय अछि जे एहि ज्ञानपीठक कुलपति वा स्थानपति ईशान्य गुरुए ओ व्यक्ति छलाह जे बसवण्णा कें लिंग क संग दीक्षित कैने छलथिन्ह। अतएव जखन ओ सामाजिक बन्धन कें तोड़ि ज्ञान क खोज मे अपन घर त्यागलन्हि तखन स्वभावतः ओ कूडल संगम क दिसि प्रस्थान कैलन्हि। हुनक जेठ बहिन नागम्मा हुनका प्रति बड़ बेसी ममतामयी छलीह। अतः हुनकहि संग ओहो संगम चलि आयल छलीह। ओहि समय मे ओ विवाहिता छलीह। सिंगिराज क मतें नागम्मा क पति शिव स्वामी कूडल संगम क निवासी छलाह। ई स्वयं मे अति प्रसन्नतादायक संयोग छल।

संगम एक आदर्श स्थान छल। एहि ठाम बसवण्णा अपन अध्ययन क अनुसरण एवं इच्छित उद्देश्यक प्राप्ति क' सकैत छलाह। गुरु ईशान्य संभवतः शैव सम्प्रदायक कालमुख विचारधारा क छलाह। ओ वैदिक बलिप्रदान एवं कर्मकाण्डक अपेक्षा लिंगधारण कें प्राथमिकता दैत छलाह तथा उदार मतवादक

क महान विद्वान छलाह। हुनका बसवण्णा मे असाधारण चरित्र क आश्वासन भेटलन्हि। हुनक समर्थ मार्ग-दर्शन मे बसवण्णा गम्भीर अध्ययन एवं आध्यात्मिक चिन्तन मे किछु वर्ष बितौलन्हि। हुनक जीवन क ई अवधि अत्यधिक सार्थक छल। एही स्थल पर हुनक भविष्य क योजना क आकार-प्रकार और पंथ निर्धारित भेल।

ओ वेद, उपनिषद, आगम, पुराण एवं काव्यक संग-संग विभिन्न धार्मिक पंथ एवं दर्शन क व्याख्याक व्यापक अध्ययन कैलन्हि। ओ एहि सभक अध्ययन आलोचनात्मक दृष्टिकोण सँ कैलन्हि। हुनक क्रान्तिकारी मन ओहि सभ कल्पना, आकर्षक और आदर्श कें कार्य मे परिणत कैलन्हि जाहि सँ ओ आकृष्ट छलाह। विचार एवं आदर्श कें ओ ग्रन्थ में परिणत करब प्रारम्भ क' देलन्हि। स्वयं एक महान भक्त होयबाक कारणें ओ शैव-संत लोकनिक भक्ति-गीत कें अति उत्कण्ठा क संग कंठस्थ क' लेलन्हि। जेना-जेना ओ अपन धार्मिक उत्साह कें वाणी क रूप मे व्यक्त करै लगलाह तेना-तेना हुनक कवि विकसित होइत गेल।

ओ संगम मे कदाचित् लगभग 12 वर्ष व्यतीत कैने होथि। एकर पश्चात् हुनक जीवन मे संक्रान्ति काल उपस्थित भेल। हुनक मामा बलदेव कालचूर्य राज वंश क राजा बिज्जल क अधीन भंडारी वा वित्तमंत्री छलाह। ओ अपन पुत्री क विवाह बसवण्णा क संग करबाक प्रस्ताव रखलथिन्ह। मुदा बसवण्णा अपन आध्यात्मिक लक्ष्यक उच्चादर्श क प्रति समर्पित छलाह। ओ ई प्रस्ताव स्वीकार करबा मे संकोच व्यक्त कैलन्हि। मुदा शाम्य-गुरु हुनका विश्वास दिऔलथिन्ह जे हुनका मानव जाति क लेल अपन नवीन संदेश क संग सांसारिक जीवन मे सेहो भाग लेबाक चाही।

बसवण्णा संगम सँ मंगलवाड (महाराष्ट्र मे पंडरपुरक निकट आधुनिक मंगलवेध) चल गेलाह जतय राजा बिज्जल क तारडावडी राज्य क राजधानी छल। नागम्मा, शिव स्वामी एवं हुनक पुत्र चन्नबसवण्णा जे 8 वा 10 वर्ष क छल, बसवण्णा क संगहि एहि ठाम आबि गेलाह। बसवण्णा बलदेव क पुत्री गंगाम्बिके और राजा बिज्जल क धर्म भगिनी नीलम्बिके सँ सेहो विवाह कैलन्हि। ई ज्ञात नहि अछि जे कोन परिस्थिति मे हुनका नीलाम्बिके सँ सेहो विवाह करै पड़लिन्ह। मुदा एहि तथ्य क विषय मे कोनो मतभेद प्रतीत नहि होइछ जे हुनक दू पत्नी छलथिन्ह। हरिहर क अनुसारें हुनक दुइ पत्नी क नाम गंगाम्बिके एवं माया देवी छल।

ओ दू वर्ष धरि मंगलवाड मे रहलाह तथा अपन योग्यता द्वारा सत्तावान एवं प्रमुख बनि गेलाह। बलदेव क स्थान पर भंडारी क पद ग्रहण करबा मे ओ सर्वाधिक उपयुक्त ठहराओल गेलाह।

एहि समय कर्नाटक क राजनीतिक स्थिति मे परिवर्तन भ' रहल छल। कल्याणक (जकरा आब बसव कल्याण कहल जाइत अछि एवं जे कर्नाटक क बीडर जिला मे अछि) चालुक्य लोकनि तेलपा तृतीय क सम्राट हैबाक पश्चात् कमजोर भेल जा रहल छलाह। बिज्जल, जे चालुक्य साम्राज्य क एक सामन्त मात्र छल, स्थिति क लाभ उठा कें चालुक्य सिंहासन पर आरूढ़ भए कल्याण सम्राट बनि बैसल। ओ बसवण्णा कें कल्याण जैबाक और साम्राज्यक मंत्री-पद स्वीकार करबाक लेल सहमत क' लेलक।

बसवण्णा राजनीतिक उथलपुथल मे ने कोनो रुचि रखैत छलाह और ने हुनका सत्ता प्राप्ति क कोनो इच्छा छलन्हि, मुदा ओ कल्याण गेनाइ एवं भंडारी क कार्य भार संभारनाइ एहि हेतु स्वीकार कैलन्हि जे एहि प्रकारें हुनका अपन उद्देश्य कें प्रभावशाली रूप मे कार्यान्वित करबाक पर्याप्त अवसर भेटितन्हि।

ओ संभवतः सन् 1154 ई० मे कल्याण गेलाह एवं सन् 1167 ई० मे अभिलेखीय प्रमाण क अनुसार बिज्जल क राज्यक अवसान पर्यन्त ओतहि रहलाह। कल्याण निवास क बारह-तेरह वर्षक अल्प अवधि मे हुनक उपलब्धि असाधारण रहलन्हि।

ओ धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधि सब मे कूदि पड़लाह। कूडल संगम मे परिकल्पित अपन उद्देश्य क प्राप्ति क लेल ओ अदम्य उत्साह क संग कार्य कैलन्हि। जाति, धर्म वा योनि क भेदभाव बिना धर्म क द्वार सभक लेल खोलि देल गेल। ओ अनुभव मंडल नामक एक सामाजिक-धार्मिक विद्वत्परिषद क स्थापना कैलन्हि जे सम्पूर्ण देशक संत एवं आध्यात्मिक जिज्ञासु लोकनि कें आकर्षित कैलक! ओहि मे सँ किछु व्यक्ति क उल्लेख एहि प्रकारें कैल जा सकैछ :—कर्नाटक क विभिन्न भाग सँ अल्लभ प्रभु, सिद्धराम, मडिवल माचय्या, अंबीगर चौडय्या एवं महाराष्ट्र सँ उरीलिंग देव, आन्ध्र सँ बहुरूपी चौडय्या और सकलेसा भादारस, आदैय्या एवं सोद्दल वाचरस, सौराष्ट्र (गुजरात) सँ एवं कश्मीर सँ मौलिगेय मारय्या और हुनक पत्नी महादेवम्मा।

जन-जागृति क मार्मिक उद्देश्य मे धर्म एक जीवित शक्ति बनि गेल। धर्म कें अपन इतिहास मे कोनो आन समय मे एहन वैभव एवं एहन चमत्कारी शक्ति कहियों नहि प्राप्त भेल छल। कहल जाइछ जे बसवेश्वर अनेक चमत्कार देखौ-लन्हि। मुदा हुनक सब सँ पैघ चमत्कार ई छन्हि जे ओ जन साधारण एवं जातिच्युत लोगहु सभकें आध्यात्मिक सिद्धि क नैसर्गिक उच्चता पर पहुँचा देलथिन्ह।

हुनक क्रान्तिकारी संदेश एवं उद्देश्य रूढ़िवादी समाज मे हलचल उत्पन्न क' देलक। ओ लोकनि बसवण्णा क विरोध करबाक लेल अपना कें संगठित कैलन्हि। ओ लोकनि अनेक दोषारोपण कैलन्हि एवं बसवेश्वर क विषय मे

अनेक मनगढ़ंत कथा बना कए प्रसारित कैलन्हि एवं ई प्रयास कैलन्हि जे बिज्जल क दृष्टि मे बसवण्णा कें खसा देल जाय।

बसवेश्वर पर अभियोग लगाओल गेल छल जे ओ अपन भक्त लोकनिक भरण-पोषण लेल राजकोपक दुरुपयोग कैने छथि। मुदा जखन ओ राज्यक सम्पूर्ण लेखा-जोखा राजाक समक्ष प्रस्तुत कैलन्हि तखन ई सिद्ध भ' गेल जे समस्त दोषारोपण असत्य एवं आधारहीन मिथ्यापवाद मात्र छल।

बसवण्णा क आकर्षक व्यक्तित्व हिमालय सन पैघ बाधा कें सेहो पार क' गेल। हुनक उद्देश्य पूर्वक अपेक्षा और बेसी उत्साह क संग जारी रहल। ओ अपन पराकाष्ठा पर तखन पहुँचल जखन ब्राह्मण क पुत्री एवं अछूत हरलय्या क पुत्र क विवाह भेल। रूढ़िवादी लोकनिक मतें ई वर्णसंकर अर्थात् वर्णक अपमिश्रण छल जे धर्म क विरुद्ध छल। अतएव क्षुब्ध और अगिया बैताल भए ओ लोकनि हंगामा मचौलन्हि। ओ लोकनि बसवण्णा एवं हुनक अनुगत क विरुद्ध राजाक ओतय नालिश कैलन्हि, कारण राजा सँ तँ वर्ण-धर्मक रक्षाक आशा कैल जाइत छल।

मुदा बसवण्णा तथाकथित वर्ण सभक चिन्ता कहियो नहि कैलन्हि। ओ वर्णविभाजन क उन्मूलन करबाक लेल जीवन-पर्यन्त संघर्ष करैत रहलाह। हुनक मतें ओ विवाह सर्वथा वैध छल। हुनक तर्क ई छल जे शरण क छत्रछाया मे एक बेर आबि गेलाक पश्चात ने त' मधुवरस ब्राह्मण रहल और न हरलय्या अछूत। जखन लिंग धारण क' कए ओ भक्त बनि गेल तखन ओ वर्ण सभ सँ श्रेष्ठ भ' गेल। उत्तर गाँधी युग क हमरा लोकनि एहि तर्क क औचित्य कें बूझि सकैत छी। मुदा बारहम शताब्दी क समाज एहि प्रकार क उग्र विचार कें अंगीकार नहि क' सकैत छल। कहल जा सकैत अछि जे बसवण्णा अपन समय सँ आठ सए वर्ष आगाँ छलाह।

बसवण्णा क विरोधी लोकनि प्रबलतर भ' गेलाह। बिज्जल कें निहित स्वार्थ क दबाव मे झुक' पड़लन्हि। निर्दोष मधुवरस एवं हरलय्या कें निर्दयता-पूर्वक उत्पीड़ित कैल गेल। ओहि दुनू कें हाथी क पैर में बान्हि कें तखन धरि घिसियाओल गेलैक जावत ओकरा सभक मृत्यु नहि भ' गेलैक।

ई अत्याचार शरण सभ कें स्तब्ध क' देलक। ओहि मे सँ किछु बड़ क्रुद्ध भेलाह एवं प्रतिशोधक लेल प्रचण्ड रूप सँ अभिवचन कर' लगलाह। बिज्जल द्वारा चालुक्य सिंहासन पर अधिकार क' लेबाक समय सँ जाहि राजनीति क अन्तर्धारा विकसित भ' रहल छल, आब प्रबलतर होमए लागल। बिज्जल क शत्रु सभ स्थिति क लाभ उठौलक। बिज्जल क छोट भाय मल्लुगी वा मल्लिकार्जुन बनवासी क राज्यपाल कसापैय्या क संग मिलि गेल एवं बिज्जल कें अपदस्थ क' कए स्वयं चालुक्य सिंहासन पर आसीन हैबाक प्रयत्न करै लागल। बिज्जल

क पुत्र रायमुरारी सोवीदेव, संकमा एवं सिंहना सेहो राजमुकुट क प्रतिद्वन्द्वी छलाह। ई सभ शक्ति अवसरक प्रतीक्षा क' रहल छल। जखन धार्मिक उथल-पुथल उत्पन्न भेल तखन एक षडयंत्र रचल गेल एवं विज्जलक हत्या सम्भवतः ओकर राजनीतिक विरोधी सभ द्वारा क' देल गेलैक। मुदा कलंक क टीका शरण लोकनिक माथा पर थोपि देल गेल।

कल्याण मे जखन एहन अत्याचार भ' रहल छल तखन वसवण्णा की क' रहल छलाह ? यदि ओ स्वयं ओहि समय कल्याण मे उपस्थित रहितथि त' एहन घटनाक घटबे असम्भव छल। वसवण्णा ओ मृत्युदण्ड स्वयं ल' लितथि जे मधुवरस एवं हरलय्या कें देल गेल छलैक, हुनका ज्ञात नहि छलन्हि जे स्थिति एतेक शीघ्रतापूर्वक बदलि जैतैक। एहि कारण सभ सँ ई विश्वास होइछ जे संभवतः उपद्रव सँ दूर रहबाक लेल तथा किछु दिन शान्तिपूर्वक व्यतीत करबाक लेल ओ कूडल संगम चल गेल छलाह। मुदा स्थिति एहन शीघ्रतापूर्वक बिगड़ि गेलैक जे हुनका किछु करबाक अवसर नहि भेटलन्हि एवं ओ परिस्थितिक षडयंत्रक असहाय शिकार भ' गेलाह।

शरण लोकनि कल्याण छोड़ि देलन्हि एवं विभिन्न दिशा मे छिन्न-भिन्न भ' गेलाह। चेन्नबसवण्णा क नेतृत्व मे गंगाम्बिके, नागम्मा, शिवस्वामी एवं अन्य लोकक एक प्रमुख संभाग उत्तर कनारा में गोकर्णी क निकट उलावी चल गेल। बसवण्णा क एक निष्ठावान शिष्य आपण्णा क संग नीलाम्बिके कूडल संगम आबि गेलीह एवं वसवण्णा क अन्तिम दिन मे हुनकहि संग रहलीह।

बसवण्णा समाज सुधारके मात्र नहि छलाह, अपितु एक भगवद्दूत एवं महान रहस्यवादी छलाह। ओ ओहि नैसर्गिक प्रबंधक अनुभव करैत छलाह जे एहि घटना सभक माध्यमें चलि रहल छल। ओ सोचलन्हि जे हुनक लक्ष्य पूर्ण भ' गेल छन्हि एवं ओ ओहि भगवान संगमेश्वर क लग वापस जा सकैत छथि जिनका सँ हुनका नैसर्गिक ईश्वरीय इच्छा क एक यंत्र बनबाक आदेश भेंटल छलन्हि। आ संगमेश्वरक संग लिंगांग सामरस्य अर्थात् एकतत्वीय सम्मिलन संभवतः सन् 1167 ई० मे प्राप्त कैलन्हि। ओहि समय हुनक अवस्था मात्र 36 वर्ष क छल।

वसवण्णा क जीवन क ई संक्षिप्त इतिहास मात्र एक औपचारिक लेखा-जोखा थिक। भगवद्दूत एवं संत लोकनिक सत्य जीवन चरित्र तँ हुनक आन्तरिक संसार, हुनक आध्यात्मिक जीवन, दर्शन, सिद्धि एवं लक्ष्यक विकासक इतिहास होइत अछि। आगाँक अध्याय सभ मे हम एकरा बुझबाक प्रयत्न करब।

2

भक्ति-भंडारी

वसवण्णा सर्वाधिक सक्षम भंडारी—राजकोषाधिपति—क रूप मे प्रसिद्ध भ' गेल छलाह। कल्याणक राजा बिज्जल हुनक प्रशंसक भ' गेल छलाह। मुदा आध्यात्मिक लक्ष्यक क्षेत्र मे ओ भक्त-भंडारी छलाह, भक्तिक बहुमूल्य निधि क परिरक्षक छलाह।

शरण लोकनि मे भिन्न-भिन्न प्रकृतिक व्यक्ति भेटैत छथि। अल्लम प्रभुक साहसी आत्मा पर ज्ञानक प्रभुत्व छल। हुनक विचार क्रान्तिकारी छलन्हि एवं ओ त्याग एवं तपस्याक जीवन बितओलन्हि। चेन्नबसवण्णा कुशाग्र-बुद्धि एवं गम्भीर विद्वान छलाह। सिद्धराम मुख्यत: कार्यरत रहैत छलाह एवं निस्वार्थ सेवा करैत छलाह। ओ कर्म-मार्ग क अनुयायी छलाह। ठीक एही प्रकारें अक्का महादेवी, मडिवाल माचय्या एवं अन्य लोक सभ मे अपन अपन विशिष्ट वैयक्तिकता छल। ओहि सभ मे वसवेश्वर भक्तिक सजीव अवतार मानल जाइत छलाह।

चेन्नबसवण्णा कहैत छथि—"बसव भक्तिक विपुल उपज थिकाह।" सिद्धराम घोषित करैत छथि : "बसव भक्तिक अवतार एवं आनन्दक अवतार छथि।" मडिवाल माचय्या अपन एक वचन मे विचारोत्तेजक रूप मे कहने छथि :—

चाहे जाहि दिस देखू
देखि पड़ैछ वैह वल्लरी : वसवण्णा,
अहाँ एकटा उठाउ एवं देखू
एक गुच्छा, वैह लिंग,
गुच्छा कें उठा लिय', और देखू
ओहि मे भक्तिरस लबालब अछि।

वसवण्णा क वचन सभ कें जखन गाड़बैक ओहि सँ भक्तिरस निकलत। सौभाग्य सँ हुनक लगभग एक हजार वचन हमरा सभ कें प्राप्त अछि। ई वचन

एक अत्यन्त विचित्र मन क आध्यात्मिक यात्रा क अंकित अनुभव क भंडार थिक। हुनक आध्यात्मिक लक्ष्यक सभ चरण—मन क व्याकुल वेदना सँ, नैसर्गिक शक्तिक सिद्धि सँ उत्पन्न निर्मल प्रशान्ति धरि—हुनक वचन मे विश्वसनीय और सशक्त अभिव्यक्ति भेंटल अछि। ई वचन जिज्ञासु लोकक लेल भक्ति मार्गक जीवित नियमावली थिक।

नारद भक्तिसूत्रक अनुसारें, "भक्ति उच्चतम प्रेम थिक।" ई ईश्वर क प्रति निःस्वार्थ अटल प्रेम थिक। मुदा जावत धरि हमरा सभ कें दृश्य (दृष्टि-गोचर) सांसारिक पदार्थ मे महान सन्तोष एवं आनन्द भेटैछ, तावत धरि हमरा सभ अदृश्य दैवी शक्ति क दिस उन्मुख नहि भ' सकैं छी। हमरा लोकनि सर्वदा सांसारिक जीवनक क्षणिक आनन्द सभक अनुधावन करैत रहैत छी। हम सभ और किछु नहि, मात्र अपन हृदय क लालसा क पूर्त्ति क' सकैत छी। मुदा मात्र ओ लोक जे आत्माक अनन्त हित कें बुझैत छथि, सांसारिक आनन्द सँ किछु अधिक पैवाक लेल लालायित रहैत छथि। ई दैवी असंतोषक स्वर भक्ति क मार्ग मे पहिल डेग थिक।[1]

बसवेश्वर क आरम्भिक कथन मे आध्यात्मिक जीवन क प्रति एक दैवी असंतोष भेटैत अछि—

हे भगवान, ई संसार
हमरा अपन फंद मे पकड़ि लेने अछि
हे भगवान, बचाउ, हमरा बचाउ
सम्पूर्ण योग्यता लुप्त भ' चुकल अछि
दया करू, दया करू भगवान,
कूडल संगम।

ओ ओही स्वर मे कहैत जाइत छथि: "एहि संसारक राहु हमरा ग्रास क' लेने अछि, हमरा पर पूर्ण ग्रहण लागि गेल अछि। हम साँप क फण क नीचाँ एक बेंग जकाँ छी। संसारक साँप हमरा पंचपक्षीय अनुभूतिक विषाक्त दाँत सँ डसि लेलक अछि। हमर अपन मन हमर बात नहि मानैत अछि। डारि पर बानर जकाँ ई उछलैत-कूदैत फिरि रहल अछि।"

हमर एक विचार अछि, ओकरा एहि सँ दोसर,
हम एहि दिसि खीचैत छी, ओ दोसर दिस खीचैत अछि,
ई हमरा कुढ़ा रहल अछि एवं क्षुब्ध सेहो करैछ,
कठिन सँ कठिन परिश्रमक लेल,

---

*एहिठाम उद्धृत वचन एल० एम० ए० मैनेजंज एवं एस० एस० अंगादी द्वारा कैल गेल बसवण्णा क वचन क अनुवाद सँ लेल गेल अछि।

एवं जखन हम भगवान कूडल संगम सँ
मिलबाक लेल आतुर होइत छी.
ई हमर पथ कें अन्हार क' दैत अछि।
ई माया।

"आनन्दक एक तरंग मे स्वयं कें असीम संकट क लेल अनाश्रित क' रहल छी। हमर हृदय मे जुनि हुलकू। ई ग्रामीण गुल्लरि सन अछि। हमर जीवन घी मे सानल तरुआरि क तीक्ष्ण धार कें चाटि रहल कुकुर जकाँ अछि। हम आव ओहि पशु जकाँ भ' गेल छी जे एक दलदल मे खसि पड़ल अछि। ईश्वर, हे ईश्वर, हम पुकारि रहल छी, अहाँ कि हमरा उत्तर नहि द' सकैत छी ?

हाय, हाय, हे शिव,
अहाँ निर्दय छी,
हाय, हाय, हे शिव,
अहाँ कृपा-हीन छी।
अहाँ हमरा जन्म कियैक देलौं ?
स्वर्ग सँ अपरिचित
एहि धरती पर घोर पीड़ा भोगबाक लेल ?
अहाँ हमरा जन्म कियैक देलौं ?
कूडल संगम, हमर सुतू,
की अहाँ हमरा स्थान पर
कोनो गाछ वा झाड़ी नहि बना सकैत छलहुँ ?

"की गाछ हमरा सँ नीक नहि अछि ?" ओ पथिक कें किछु नहि त छाया त प्रदान करैछ। बसवण्णा एक भक्त क पीड़ित मन क व्यथा कें एहि प्रकारक शब्द क माध्यमे प्रकट कैने छथि।

ओ एहि आवश्यकता सँ परिचित छथि जे भगवदीय शक्ति सँ सम्बन्ध स्थापित करबाक चाही। मुदा एकर संगहि ओ अपन सीमा सँ सेहो सखेद परिचित छथि। ओ निराश नहि होइत छथि। ई मात्र प्रारम्भिक चरण थिक जे आध्यात्मिक यात्रा मे पहिने प्रकट होइछ। एहि अग्नि परीक्षा कें ओ उल्लास-पूर्वक पार करैत छथि, जकरा रहस्यवादक पाश्चात्य विद्यार्थी "आत्मा क कारी रात्रि" कहैत अछि। ओ एहि अवस्था घरि पहुँचि जाइत छथि जखन हुनक घोषणा होइछ :

ई मृत्यु लोक ईश्वर क मात्र टकसार थिक,
जे लोक एतय पुण्य अर्जित करैछ ओतय सेहो अर्जित करैछ,
एवं जे लोक एतय अर्जन नहि करैछ से ओतहु नहि करैत अछि,
हे कूडल संगम भगवान।

आब हुनक आस्था निर्मल आध्यात्मिक सिद्धि क पारदर्शी प्रतापक संग चमकैत छन्हि ओ अपन गुरु क कृपा सँ जीवन क अन्तिम लक्ष्यक अनुभूति करैत छथि एवं संगहि ओहू मार्ग क अनुभव करैत छथि जाहि पर हुनका चलवाक छन्हि। भगवान मे सम्पूर्ण निष्ठाक संग ओ हुनक अंतर मे शरणक याचना करैत छथि :—

अहीं हमर पिता छी, अहीं हमर माता
अहीं हमर बन्धु एवं सखा
अहाँ कें छोड़ि केओ हमर अपन नहि
हे भगवान कूडल संगम,
जेना अहाँ चाही, हमर उपयोग करू।

भक्तिक वैष्णव शाखा मे ई अद्वितीय प्रेम एवं सर्वथा समर्पण, जे प्रपत्ति एवं शरणागति कहबैछ, हिनका दैवी इच्छा क एक माध्यम बना दैत छन्हि। एहन किछु शेष नहि रहि जाइछ जकरा ई अपन निजी कहि सकथि :

हमर शोक-विलाप अहींक थिक,
हमर लाभ-हानियो अहींक थिक,
हमर सम्मान और लाज सेहो अहींक
हे भगवान कूडल संगम।
लता कें अपन फल क भार
कोना अनुभूत भ' सकैछ ?

एहि प्रकारें भगवान क समक्ष अपन समर्पणक माध्यमें ओ आत्माक प्रारम्भिक यंत्रणाक शमन करैत छथि। आब ओ भगवत्कृपाक प्रभावकारिताक गीत गम्भीर विश्वासक संग गावि सकैत छथि—

हे भगवान, यदि अहाँक इच्छा हो,
काठ सँ अंकुर फूटि सकैत अछि,
हे भगवान, यदि अहाँक इच्छा हो,
बांझ गाय सेहो दूध दैत अछि,
हे भगवान, यदि अहाँक इच्छा हो,
विष अमृत भ' जाइत अछि,
हे भगवान, यदि अहाँक इच्छा हो,
सभ वस्तु एक आह्वान क पालन करैत अछि,
हे भगवान कूडल संगम !

ओ संसार क प्रत्येक पदार्थ मे भगवान क शक्ति कें चिन्हवा मे समर्थ छथि। ओ अपन अन्तरक अहंकार कें बैलाबैत छथि एवं भगवत् कृपा प्राप्त करबाक लेल अपन हृदय कें खुजल रखैत छथि।

भक्ति-पथ मे अहंकार कें विनष्ट करब एक अनिवार्य पद-निक्षेप थिक। हम सभ प्रत्येक डेग पर 'हम' एवं 'हमर' क अवरोध बनबैत छी। सीमित 'अहम्' केर नाशक हैबाक उपरान्ते असीम एवं सार्वभौम अहम्' केर जन्म होइछ। अहंकार एक सहस्र मस्तक-धारी सर्प थिक। ओ धन, दरिद्रता, सत्ता, कुलीनता एवं ज्ञान क रूप मे सेहो अपन फण उठबैत अछि। जिज्ञासु कें एकर माथ सावधानी सँ थकुचि देमय पड़तैक। कोनहुँ समय तथा कोनहुँ प्रकारें उत्पन्न अपन अहंकार क शमन हो, ओकरा करै पड़तैक। वसवण्णा हमरा सभक समक्ष प्रत्येक स्थिति मे कर्तव्यनिष्ठाक प्रति जागरूक भेटैत छथि। अपन अहंकारक पालन-पोषण और अपन अभिमान क उत्तेजन करबा मे समस्त परिस्थिति हुनक अनुकूल छलन्हि। मुदा ओ ओहि सभ वस्तुक पहुँच सँ ऊपर उठि गेल छलाह।

आमक मध्य हम एक उर्वरक फल छी,
अहाँक शरण क समक्ष लाज छोड़ि कए
हम स्वयं कें भक्त कोना कहि सकैत छी ?
कूडल संगम क भक्त लोकनिक समक्ष
हम कोना भक्त भ' सकैत छी ?

ओ निरभिमान भए स्वीकार करैत छथि जे हुनक ईश्वर-प्रेम शरण सभक कृपाक फल थिक। अपन एक 'वचन' मे ओ कहैत छथि :—

हमरा सँ छोट मनुख नहि, केओ नहि अछि,
शिव क भक्त सँ महत्तर नहि, केओ नहि अछि।

ओहि समय मे व्यक्ति क सामाजिक स्तरमात्र जातिक आधार पर निर्धारित होइत छल। जाति एवं वर्गक अभिमान कें तोड़ब अत्यन्त कठिन छल। मुदा वसवेश्वर अपनहि जातिक अभिमान कें अस्वीकार क' देने छलाह। ओ कहैत छथि : —

हे भगवान
उच्च जाति मे जन्म लेबाक समाघात
सहन नहि कराउ।

जे अपन गणना चेन्नय्या, कक्कय्या एवं आन एहन लोक क संग मे करैत छलाह तिनका अछूत क रूप मे प्रथाक अनुसारें नीच मानल जाइत छल। एहि प्रकारें वसवण्णा अत्यन्त सूक्ष्म अहंकारक, अन्तर्निहित अहंकारक उन्मूलन केलन्हि।

भक्ति ओहि दृढ़ संकल्पक माँग सेहो करैत अछि जाहिसँ कोनहु परिस्थिति मे पथ पर बढ़ैत रहल जाय।

चाहे आगि आवै, चाहे सम्पत्ति आवै, हम नहि कहैत छी
हमरा किछु चाही अथवा नहि चाही ।

एकरे नैष्ठिक भक्ति वा अटूट उत्साह एवं एकनिष्ठ आस्थाक संग माहेश्वर स्थल कें भक्ति कहल जाइत अछि। षट-स्थल क नाम सँ आख्यान षट्पर मे सँ ई स्थल दोसर पद-निक्षेप थिक जे वीरशैववादक व्यवस्थाक अनुसारें नैसर्गिक अवस्था दिसि ल' जाइत अछि। बसवण्णा समेत समस्त शरण लोकनि सभ एकर अनुगमन कैने छथि। भक्त, महेश, प्रसादी, प्राणलिंगी, शरण और ऐक्य आध्यात्मिक साधना ई छओ चरण अछि । एहिमे हमरा सभकें प्रारम्भिक पीड़ा सँ ल' कए सार्वभौम आत्मा क सिद्धि सँ उत्पन्न चरम परमानन्द एवं शान्ति धरि ओ सभ मनोदशा भेटैत अछि जाहि मे कोनहु भक्त कें रहै पड़ैत छैक ।

षट-स्थल प्रणाली मे भक्ति विकसित होइत रहैत अछि एवं अंतरिक्षीय आयाम धारण क' लैत अछि । भक्त स्थल मे हमरा सभ कें श्रद्धा-भक्ति अर्थात् आस्था भेटैत अछि। ई विकसित भ' कए एहि प्रकारें सुस्थित भ' जाइछ। महेश-स्थल मे नैष्ठिक भक्ति-प्रसादी मे अवधान (सतर्कता) भक्ति, प्राणलिंगी मे अनुभव (सर्वोच्च क अनुभव) भक्ति, शरण मे आनन्द (परमानन्द) भक्ति एवं अंततोगत्वा ऐक्य मे समस्त (परमात्मा एवं आत्मा क सम्मिलन) भक्ति—भक्त एवं भक्तिक विकास क ई धारणा षट-स्थल प्रणाली मे बड़ सार्थकताक संग प्रकट कैल गैल अछि। मुदा ओ एहि प्रबन्धक सीमा सँ बाहर अछि ।

महेश्वर स्थल मे बसवण्णा आस्थाक अटलता प्राप्त करैत छथि। हुनक भक्ति समस्त अशुद्धता सँ मुक्त हैबाक कारणें आब दैवी अंतरिक्षीय इच्छा प्रकट करैत अछि एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे व्याप्त अछि । ओ शिव-कृपा क रूप मे समान संतुलन क संग पीड़ा एवं प्रसन्नता दुनूक स्वागत करैत अछि । ओ जनैत अछि जे शिव अपन भक्त क अनेक परीक्षा लैत छथि एवं ओकरा कसौटी पर कसैत छथि ।

ई कहू जे हमरा अहाँ पर विश्वास अछि,
ई कहू जे हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी,
एवं स्वयं कें अहाँ क हाथें बेचि देने छी,
अहाँ परीक्षा लेल हमर शरीर कें झमारैत छी।
हमर परीक्षा लेवाक लेल
हमर मन एवं संपत्ति कें अहाँ झमारैत छी।
एवं जखन एहि सभ परीक्षण सँ
हम संकुचित नहि होइत छी

117162
10.12.04
SHIMLA

हमर ईश्वर कूडल संगम
संवेदित भ' कए स्वीकार क' लैत छथि।

कहल जाइछ जे ईश्वर धरि पहुँचवाक लेल भक्ति-मार्ग सुगमतम अछि। मुदा आन प्रकारें ई अत्यन्त कठिन अछि। बसवेश्वर कहैत छथि : धर्म परायण-ताक नाम पर चलैवला कार्य अहाँ नहि क' सकैत छी, ई अवैत-जाइत आरा जकाँ चीरि दैत अछि किएक तँ ई एक अटल एवं अविचल आस्था थिक। बसव एहीं आस्थाक स्वामी छलाह एवं तें ओ ईश्वर कें अपन अविभाजित प्रेम समर्पित करैत पथ पर सफलतापूर्वक बढ़ैत गेलाह।

ई प्रेम मूलभूत रूप से अलौकिक अछि एवं 'हम' तथा 'हमर' क सीमा सँ अनभिज्ञ अछि। मुदा एहि प्रेम कें व्यक्त करैत भक्त एकरा भगवान क संग अनेक सांसारिक सम्बन्ध क रूप मे परिकल्पित करैत अछि। एहि दृष्टिकोण क अनुसारें भक्ति क वर्गीकरण पाँच रूपें कैल गेल अछि : दास्य (सेवा भाव), सख्य (मैत्री भाव), वात्सल्य, माधुर्य (पति-पत्नी क प्रेम भाव) एवं शान्त (निर्विकार संबंधक भाव)।

एहि मे सँ किछु प्रकार कें बसवण्णा उत्कृष्टतापूर्वक अभिव्यक्त कैलन्हि अछि। मुदा अन्यान्य शरण लोकनि जकाँ ओहो अपन व्यक्तिगत रूप क अपेक्षा ईश्वर क निर्वैयक्तिक प्रकृति कें प्रमुखता देने छथि। सांकेतिक रूप मे कुरुहु वा लिंग क पूजा करैत शरण लोकनि अरूहु वा दैवी चेतना कें प्राप्त करबाक आकांक्षा करैत छलाह जकरा कुरुहु सँ पृथक मानल जाइत छैक। अतएव ओ लोकनि एहि सभ प्रकार कें बैसी दूर धरि नहि पसारि सकलाह। मुदा सुन्दर दास एवं अन्य जन सभक द्वारा रचित दास साहित्य मे ओकर विस्तारपूर्वक वर्णन कैल गेल छैक। तैयो अक्का महादेवी, सिद्धराम, उरिलिंग देव सदृश शरण लोकनि एवं बसवण्णा सेहो एहि मे किछु प्रकारक अनुभव कैने छथि।

कूडल संगम क समक्ष बसव एक कर्त्तव्यनिष्ठ सेवक एवं एकनिष्ठ पत्नीक रूप मे समर्पण करैत छथि। निम्नांकित वचन मे ओ स्वयं कें एक आदर्श सेवक क रूप मे अभिव्यक्त करैत छथि :—

यदि योद्धा (मैदान सँ) पड़ा जाइत अछि
तखन ओकर स्वामी लज्जित होइछ
हे भगवान कूडल संगम, अहाँ हमरा
निष्कपट मन एवं शरीर सँ, धन विना
संघर्ष एव विजय क शक्ति दैत छी।

"यदि कोनो योद्धा युद्ध क्षेत्र सँ घूरि अबैत अछि त' ओकर स्वामीक क्षति भेलैक। एहि प्रकारें सेहो अहाँ स्वामी छी एवं हम सेवक। यदि हम जीवन संघर्ष मे पराजित भ' कए भागि जाइत छी त' ई अहाँक अपमान थिक। अतः ओ

प्रार्थना करैत छथि, "हमरा संघर्ष एवं विजय क शक्ति दियह।"

सतीपति भाव—दाम्पत्य प्रेमक भावना—कूडल संगम क प्रति चरम रहस्यवादी समर्पण कें व्यक्त करबाक एक आन प्रकार अछि।

हम हरदी मे नहायल ओहि स्त्री जकाँ छी,
जे सर्वांग स्वर्णाभूषण विभूषित अछि,
मुदा अपन पति क प्रेम हेरा चुकल अछि,
हम ओहि व्यक्ति जकाँ छी
जे अपन शरीर पर भस्म क लेप कैने अछि,
एवं अपन कण्ठ मे माला लपेटि लेने अछि।
एवं जे, हे ईश्वर, अहाँक प्रेम हेरा चुकल अछि।
हमर गोत्र मे केओ एहन नहि अछि
जे पाप मे खसबाक उपरान्तो जीवित हो
हे भगवान कूडल संगम,
जेना अहाँक इच्छा हो हमर रक्षा करू।

शरण—पत्नी—हैबाक सम्बन्ध सँ ओ भगवान—लिंग—सँ प्रार्थना करैत छथि। ई "शरण सती, लिंग पति" प्रवृत्ति शरण सभक रहस्यपूर्ण पथ मे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका क निर्वाह करैत अछि।

एतय वर्णित भक्ति क एहि पाँच प्रकार क अतिरिक्त आन नओ पक्ष क सेहो वर्णन केल गेल अछि। एहि मे श्रवण (सुनबाइ), कीर्त्तन (गयनाइ) एवं स्मरण (मन पाड़नाइ) आदि अछि। एहि सभक माध्यमेँ भगवदीय शक्तिक गौरवगाथा सुनबाक लेल एवं भगवान क प्रशस्ति गेबाक लेल भक्त अपन आध्यात्मिक योग्यता क विकास करैत अछि। बसवण्णा क किछु वचन मे एकरा प्रभावशाली ढंग सँ व्यक्त कैल गेल अछि।

एकर अतिरिक्त बसवण्णा द्वारा अपनाओल गेल पटस्थल पथक आठ गोट सहायक होइत छथि। ई अष्टवर्ण कहबैत छथि; गुरु, लिंग, जंगम, प्रसाद, पादोदक, विभूति, रुद्राक्षि एवं मंत्र। ई भक्त कें छओ डेग पर पहुँचबा में सहायक होइत छथि।

ओ एहि अष्टवर्ग कें किछु एहि प्रकारें अपनाओलन्हि जे ई आन्तरिक शुद्धता क महत्त्वपूर्ण प्रतीक एवं भगवदीय शक्ति क दिसि हुनक प्रयास मे हुनक रक्षा करबा मे सन्नद्ध अभेद्य कवच बनि गेलन्हि। ओ अपन तन, मन एवं धन क्रमशः गुरु, लिंग एवं जंगम कें समर्पित क' देलन्हि। एकरा त्रिविध दसोहा वा त्रिपक्षी पूजा कहल जाइछ।

अपन शताधिक वचन सभ मे ओ गुरु, लिंग एवं जंगम क अपन ऐहिक धारणा अभिव्यंजक रूप मे व्यक्त करैत छथि। एहि वचन सभ मे एहि धारणा

कें एक नव आयाम प्राप्त होइछ जे कोनो धर्म विशेष क समस्त सीमा कें पार क' जाइत अछि। हुनक भक्ति क एहि महान पक्षक विशेष अध्ययन क आवश्यकता छैक। एतवा कहव पर्याप्त होयत जे हुनक नैसर्गिक प्रेम गहन अछि एवं पूर्णतया परिप्लावित करैत प्रवाहित होइछ। इयैह हुनका प्रसादी एवं प्राणलिंगी चरण सँ आगाँ वढ़वैत शरण-स्थल धरि पहुँचवैत छन्हि।

एतय एहि चरण मे भक्त क प्रारम्भिक पीड़ा पूर्णतया मेटा जाइछ। आब ओ आनन्दपूर्वक गवैत अछि—

हमर जीभ अहाँक नामक अमृत मे डूवल अछि,
हमर आँखि अहाँक छवि सँ भरल अछि,
हमर मन अहाँक विचार सँ भरल अछि,
हमर कान अहाँक ख्याति सँ भरल अछि,
हमर भगवान कूडल संगम,
अहाँक चरणकमल मे हम एक मधुमाछी छी,
जे अहीं मे लीन अछि।

संयोजक प्रेमक अपन भगवद्दर्शन मे ओ पूर्णतया परिवर्तित भ' कए एक सार्वभौम मनुष्य वनि जाइत छथि। आब ओ भगवानक हाथ मे बजैवाक लेल एक वंसी वनि गेल छथि। तैयो ओ संतुष्ट नहि छथि एवं एक डेग आरो आगाँ वढ़ैत छथि—

हमर पैर नचवा सँ नहि थकैत अछि,
हमर आँखि दर्शन सँ नहि थकैत अछि,
हमर जी गैवा सँ नहि थकैत अछि,
और की ? और की ?
हमर हृदय पूर्ण रूप सँ अहाँक पूजा
करवा सँ नहि थकैत अछि
और की ? और की ?
हे भगवान कूडल संगम हमरा पर ध्यान दिय।
जे हम अत्यधिक प्रेमपूर्वक करैं चाहव
ओ अछि अहाँक पेट कें चीरि ओहि मे
प्रविष्ट भ' गेनाइ।

अन्तिम पाँती सारगर्भित अछि। ओ उत्कण्ठापूर्वक भगवदीय शक्तिक गहनता मे प्रविष्ट होयव एवं कूडल संगम वनि जैवाक लालसा करैत छथि। भक्त एवं भगवान क वीच एकाकार तखन होइछ जखन द्वैत नहि रहि जाइछ। भक्त एवं भगवान दुनू मिलि कए एक भ' जाइत छथि।

ई अन्तिम चरण ऐक्य-स्थल थिक। एतय भक्त भगवानक अपरोक्ष एवं

अंतर्दर्शी बोधक अनुभव करैछ। लिंग एवं अंग क अभिन्नतत्वीय एकता उत्पन्न भ' जाइछ, जकरा लिंगांग सामरस्य वा आध्यात्मिक लक्ष्यक उच्चतम उपलब्धि कहल जाइत छैक। ओ सार्वभौम आत्मा मे पूर्णतया विलीन एवं समस्त ब्रह्मांड क संग सह-विस्तृत भ' जाइछ। भक्ति मे लीन ओ भक्ति क वास्तविक अवतार बनि जाइत अछि। ओ कहैत अछि : "अनुराम हमरा खेहारि कें गिड़ि लेलक।"

निम्नांकित वचन हुनक उपलब्धिक उच्चता प्रकट करैछ :—

भक्तिक भूमि पर
गुरु रूपी बीज अंकुरित भेल
एवं लिंग रूपी पत्रक जन्म भेल
तखन विचार क रूप मे पुष्प
आ क्रिया क रूप मे कोमल फल
एवं ज्ञानक रूप मे परिपक्व फल
जखन ई ज्ञान क फल ठारि सँ टूटि कए खसल
देखू, कूडल संगम एकरा स्वयं चाहैत
उठा कए राखि लेलथिन्ह।

आव बसवण्णा एक आदर्श फल क रूप मे परिपक्व भ' कए स्वयं कें कूडल संगम क समक्ष प्रस्तुत क' दैत छथि जे फल कें स्वयं उठा लैत छथि एवं जुगता कें अपन हृदय मे राखि लेत छथि।

एहि प्रकारें वीर शैव मतक अनुसारें द्वैत सँ प्रारम्भ करैत ओ अद्वैत मे अपन संतुष्टि प्राप्त करैत छथि। पुरन्दर दास, कनक दास एवं हुनक आन अनुयायी लोकनि द्वारा अपनाओल गेल भक्ति क दास्य-परम्परा तथा अद्वैत क अनुयायी शरण लोकनिक षट्-स्थल प्रणाली क मध्य इयह अन्तर अछि। पुरन्दर दास अन्त मे सेहो हरि सँ भिन्न परमानन्दक उपभोग करैत छथि। मुदा बसवण्णा मे यद्यपि प्रारम्भिक द्वैत भेटैछ, एवं अंततोगत्वा ने रहैछ भक्त अथवा भक्ति, ने उपासक भेटैछ और ने उपास्य। ओ स्वत: परमानन्द वा भगवान बनि जाइत अछि। पूजा, पुजारी एवं पूज्य (भक्ति, भक्त एवं भगवान) एक मे विलीन भ' जाइत छथि।

ई द्वैत एवं अद्वैत क संश्लेषण मात्र क नहि, अपितु भक्ति, ज्ञान एवं कर्म क संश्लेषण क सेहो आदर्श उदाहरण थिक बसवण्णा मे एक रागात्मक प्रचुरता अछि जे दार्शनिक अन्तर्दृष्टि एवं गहन अनुकम्पा क संग जुड़ल अछि तथा जे मानव जाति क कल्याण क लेल विगलित होइछ। हुनक भक्ति असीम गूढ़ अनुभूति सँ सजीव अछि। ई निर्धारित लक्ष्य क दिसि संयम एवं गरिमा क संग आगाँ बढ़ैत अछि किये क तँ ओ जगमगाइत बुद्धि क प्रकाश मे परिपक्व एवं

शुद्धीकृत भावना सँ युक्त अछि। नदी जकाँ, जे स्वयं समुद्र बनबाक लेल समुद्र मे विलीन भ' जाइछ, हुनक भक्ति भगवान कूडल संगम मे विलीन भ' कए स्वयं भगवान भ' जाइछ।

ओ एकरा परम नीरवता क स्थिति कहैत छथि। उपनिषदक अनुसारें सार्वभौम परमात्मा क संग चरम संपर्क क ओहि स्थिति पर्यन्त वाक्शक्ति नहि पहुँचि सकैछ एवं मस्तिष्क ओकरा नहि बूझि सकैत अछि। तैयो बसवेश्वर ओहि स्थिति क भव्यता कें शब्द मे समेटबाक एक महत्त्वपूर्ण प्रयास करैत छथि—

ओहि सत्ता कें देखू जे शेष रहैछ
जखन समग्र गहन अन्धकार तिरोहित भ' जाइछ,
जखन प्रकाश पर प्रकाश राज्याभिषिक्त होइत अछि,
तखन जे एकता घटित होइत अछि
ओ मात्र भगवान कूडल संगम कें ज्ञात छन्हि।

प्रकाश प्रकाश मे मिलि जाइछ एवं जे अन्त मे शेष रहैछ ओ मात्र प्रकाश थिक।

3

एक क्रान्तिकारी संत

बसवेश्वर क आध्यात्मिक साधना क समय मे कहल गेल वचन अंतर्दशा अनुभव क जीवित कीर्तिमान एवं अत्यन्त उच्च कोटि क आध्यात्मिक सिद्धि मे सहायक आचार संहिता थिक। ई कोनो बौद्धिकतापूर्वक रचित विचार परिपाटी नहि थिक, आर ने ई शास्त्री लोकनिक दर्शन जकाँ शुष्क अछि। एकर लक्ष्य स्पष्ट अछि। एकर प्रशंसनीय विशेषता ओ नैसर्गिक प्रेम क ओ सिद्धान्त थिक जाहि मे विचार एवं कार्य दुनू सम्मिलित रहैछ।

हुनक भक्ति-प्रवृत्ति अर्थात् सांसारिक गतिविधि सभ मे भाग लेब तथा निवृत्ति अर्थात् समस्त गतिविधि क त्याग क बीच एक संतुलन स्थापित करैछ। मनुष्य क बाह्य जीवन एवं आन्तरिक जीवन क मध्य ई एक सम्यक् सन्तुलन थिक। ई एक दुर्लभ संगम थिक एवं मानवीय व्यक्तित्वक तीनू पक्षक—विचार, अनुभूति एवं कार्य क—एक अप्रतिभ संश्लेषण थिक।

ओ कर्मठ व्यक्ति छलाह। हुनक कार्यक मूल एक ठोस दर्शन एवं जीवन क प्रति एक महान मनोवृत्ति मे बहुत भीतर धरि पैसल छल। एहि मनोवृत्तिक प्रेरक छल मानवताक प्रति अतुलनीय अनुकम्पा एवं सार्वभौम सत्ता क प्रति निःस्वार्थ प्रेम। ओ एहि समस्त आयाम मे छलाह एवं प्रत्येक आयाम मे हुनक उपलब्धि अप्रतिम छलन्हि।

बसवेश्वर आत्मविभोरता क ओ उच्चतम स्थिति प्राप्त कैलन्हि जकरा कोनो आध्यात्मिक आकांक्षी पएबाक इच्छा क' सकैत अछि। हुनका ई प्राप्ति संसार कें बिना छोड़नहि ओ घोर तपश्चर्या मार्ग कें बिना अनुसरण कएनहि भेलन्हि। ओ संसार कें स्वीकार करैत छलाह एवं ओकर सम्मान सेहो करैत छलाह। ओ जीवन क सामान्य गतिविधि सँ मुँह कहियो नहि मोड़लन्हि। लक्ष्यसिद्धिक खोज मे बुद्ध संसार क परित्याग कैने छलाह। मुदा बसवण्णा संसार कें स्वीकार करैत पूर्णता कें प्राप्त कैलन्हि।

देश क राजनीतिक जीवन मे ओ एक उच्च आसन पर विराजमान छलाह।

हुनक पारिवारिक जीवन सुखी छल। हुनका लेल परित्याग क अर्थ जीवन कें अस्वीकार करब नहि छल। ओ स्त्री, स्वर्ण एवं भूमि कें माया क प्रलोभन नहि मानैत छलाह। अपन एक वचन मे ओ कहैत छथि—

अपन इन्द्रिय सभ पर लगाम लगबैत अहाँ
जे किछु करैत छी ओ अछि व्याधि सभ कें जगाएब
कियैक तँ पाँच इन्द्रिय अवैछ एवं सोझा मे ठाढ़ भए
अहाँ क उपहास करैछ।
की सिरियाला एवं चंगाले
नवविवाहित स्त्री-पुरुष क
अपन प्रेम-रात्रि सभ कें छोड़ि देने छलाह ?
की सिन्धु वल्लला अपन कामानंद
एवं अपन आमोद-प्रमोद कें त्यागि देने छलाह ?
हम अहाँक सोझा मे शपथ लैत छी,
यदि हम कखनहुँ दोसर क स्त्री
वा संपत्ति क प्रति लोलुप भ' जाइ
त' हे भगवान कूडल संगम
हमरा अपनेक चरण सँ दूर हटा देल जाय।

समुचित ढंग सँ इन्द्रिय क रुचि सभ क आनन्द लेवाक चाही। एहि मे कोनो दोष नहि छैक। मुदा एकर संगहि संग इहो बुझवाक चाही जे आनन्द क सीमा होइछ। तैं इन्द्रिय सभ पर नियंत्रण रखवाक चाही। इन्द्रिय सभ क निग्रह स्वचालित एवं यत्नहीन हेवाक चाही। इन्द्रिय क कृत्रिम दमन एवं आत्मसंतापन क कोनहु उपयोग नहि अछि। आत्मा क यात्रा मे सुविधा पहुँचैबाक लेल इन्द्रिय सभ कें हमरा सभक सेविका हेवाक चाही। ओकरा सभ कें आत्मा क प्रगति कें अवरुद्ध कए क्रूर बाधक बनवाक अनुमति नहि देल जा सकैछ।

हमरा लोकनि कें सांसारिक आनन्द क अपर्याप्तता कें बुझबाक चाही। मुदा ककरो उत्साहहीन अनुभव करबाक आवश्यकता नहि छैक। एहि मानव जीवन मे ई सम्भव अछि और एहि जीवन मे सर्वथा भीतरी सत्य क स्थिर मर्म क अन्वेषण करवाक चाही। तें ई नश्वर जीवन पवित्र एवं सार्थक अछि। बसवण्णा कहैत छथि—"ई नश्वर संसार निर्माता क टकसाले थिक। हम सभ एहि टकसाल सँ वहरायल सिक्का छी। यदि कोनो सिक्का एहि ठाम नकली प्रमाणित होइछ त' ओत्तहु नकलिये रहत।" ओ पुछैत छथि : "जे लोक एहि ठाम नीक-जकाँ नहि जीवि सकत ओ एकर पश्चात् की पाबि सकैछ ? निराशा एवं विरक्ति क संग एक जंगम शव जकाँ जीयब जीवन क आध्यात्मिक रूप

नहि थिक। एकरा वास्तविक तपस्या वा संन्यास सेहो नहि मानल जा सकैछ। हमरा लोकनि कें एत्तहि रहवाक अछि एवं नीक जकाँ रहवाक अछि आर संग-हि-संग आत्मा क ओहि रूप कें प्राप्त करबाक अछि जे नश्वर जीवन क सीमा सँ बाहर छैक।"

जीवन जखन अमर-जीवन क खोज मे बाधक नहि रहि जाइछ तखन ओ और बेसी सार्थक भ' जाइछ। संसार वा सांसारिकता क बताह घोड़ा पर सवार हैबाक लेल हमरा सभ कें योद्धा जकाँ कृतसंकल्प हैबाक चाही। घोड़ा क दया पर निर्भर हैबाक स्थान पर हमरा लोकनि कें ओकर स्वामी हैबाक चाही। बसवण्णा ओहि नैतिक एवं आध्यात्मिक सिद्धान्त सभ क निरूपण कैने छथि जकर माध्यमें हमरा सभ कें संसार क घोड़ा क स्वामित्व भेंटि सकैछ।

ओ गप्प हाँकबा मे एवं गप्प कें मेहियैबा मे विश्वास नहि करैत छलाह। ओ एहन कोनो बात नहि कहने छथि जकरा अनुसार ओ आचरण नहि क' सकेत छलाह। हुनक जीवन मे उपदेश सँ पूर्व आचरण क स्थान छल। हुनका हिन्दू धर्म मे उपनिषदीय दर्शन हास्यास्पद लगलन्हि जे समस्त मानवता क सारभूत एकता कें प्रमाणित करैछ, कारण जे ओहि मे व्यावहारिक रूप मे चातुर्वर्ण्य विभाजन क अतिरिक्त शताधिक जाति एवं पंथ अछि जे परस्पर श्रेष्ठता क दावा करैछ। एकर अतिरिक्त अछूत प्रथा एहन छल जकरा बसव समाज क कलंक एवं मनुष्य क अपमान मानैत छलाह।

ओ सम्पूर्ण प्रणालीक तीव्रतापूर्वक निन्दा कैने छथि एवं चातुर्वर्ण्य वा चतुष्पक्षीय विभाजनक अन्तराल मे प्रचलित स्वार्थ एवं शोषण सभ क विरुद्ध क्षोभ प्रकट कैने छथि। ओ धर्म क सत्य प्रकृति कें विवेकपूर्वक प्रकाशित कैलन्हि। निम्नांकित वचन हुनक विवेकशीलता क एक चित्रण थिक—

मनुष्य जे वध करैछ, चण्डाल थिक,
मनुष्य जे सड़ल-गलल मांस खाइछ, नीच जाति क व्यक्ति थिक,
कतय अछि जाति एहिठाम, कतय ?
हमरा लोकनिक कूडल संगम क शरण
जे समस्त जीवित वस्तु सभ सँ प्रेम करैछ,
कुलीन अछि।

एहि प्रकारें ओ घोषणा करैत छथि जे मनुष्य क मोल ओकर जन्म सँ नहि, अपितु ओकर विचार एवं कृति, आचरण एवं चरित्र सँ निर्धारित हैबाक चाही।

शताधिक जाति एवं उपजाति सभ एवं ओकर मध्य अपमानजनक विवाद सभ कें देखि हुनका घृणा होइत छल। मानव जाति मे ओ मात्र दू वर्ग मानैत छलाह : भक्त एवं भाविस अर्थात् नीक एवं अधलाह। ओ अपन अभिमत कें

अन्यान्य ऋषि-मुनि क अनेकानेक उदाहरण क माध्यमे चित्रित कैलन्हि एवं देखोलन्हि जे जन्मगत जाति मनुष्य क मोल क निर्णायक कथमपि नहि भ' सकैछ :

व्यास एक धीवर-सन्तान छलाह,
मार्कंडेयक जन्म जाति-च्युत सँ भेल,
मन्दोदरी वेंग क बेटी छलीह,
जाति मे, जाति क चिन्ता जुनि करू।
अहाँ पहिने की छलहुँ ?
अगस्त्य वास्तव मे चिड़ेमार छलाह,
दुर्वासा जुत्ता बनबैत छलाह,
कश्यप एक लोहार छलाह,
कौंडिन्य नामक ऋषि,
तीनहु लोक जनैछ जे नौआ छलाह।
तों सब अंकित क' लैत जाह
हमरा लोकनिक कूडल संगम क शब्द थिक :
की भेल यदि केओ नीच कुल मे जन्म लेलक
मात्र शिव भक्त क जन्म नीक अछि।

ओ एहि प्रकारें जात्यभिभूत समाज क निन्दा कैलन्हि एवं हिन्दू समाज क चतुष्पक्षीय विभाजन क विरुद्ध दृढ़तापूर्वक विरोध क स्वर उठौलन्हि ।

सहभोजन मे भाग लेबा मे, विवाह क विषय मे एवं दैनिक जीवन क आन सभ मामिला मे वा सामाजिक सम्बन्ध मे ओ जाति भेद कें स्वीकार नहि करैत छलाह। हुनक विचार सँ एहन भेदभाव क आधार अवांछनीय कृत्रिम विभाजन छल जे मनुष्य-मनुष्य क बीच अन्तराल क सृष्टि कैलक :

ओ कहैत अछि जे भोजन करबा मे
एवं वस्त्र धारण करबा मे
हुनक प्रतिज्ञा प्रभावित नहि होइछ ;
जखन ओ विवाहक प्रबन्ध करैत छथि,
जातिक दिस तकैत छथि।
अहाँ हुनका भक्त कोना कहि सकैत छी ?
अहाँ हुनका चतुर कोना कहि सकैत छी ?
हमर सुनू, हे कूडल संगम भगवान,
ई मासिक धर्म क समय क ओहि महिला जकाँ अछि
जे शुद्ध जल सँ नहा रहल अछि।

ओ वास्तव मे क्रान्तिकारी छलाह। विशेष क' कए आठ सौ वर्ष पूर्व जाति-

ग्रस्त समाज पर हिनक प्रभाव क कल्पना नीक जकाँ कल जा सकछ। यदि बसव मात्र इयैह घोषणा कैने रहितथि तँ भ' सकैत अछि जे प्रतिक्रियावादी शक्ति हुनक उपेक्षा क' देने रहैत मुदा ओ जे किछु कहैत छलाह ओहि पर आचरण सेहो करैत छलाह। जाहि सभ अछूत कें कुलीन वर्ग दूर रखने छल एवं जिनका सभ पर दृष्टियो पड़ि गेने स्नानोपरान्त पवित्र हैवाक विधान छलैक तकरा सभ कें बसवण्णा द्वारा स्थापित सामाजिक-धार्मिक संस्थान क अनुभव मंडप मे सदस्यक रूप मे सूचीवद्ध कैल गेल छलैक। ओ ओहि सभ कें धर्म एवं समाज दुनू मे समान स्थान देलन्हि। ओ कहैत छथि—

यदि हम सिरियाला कें व्यापारी
और माचय्या कें धोवी कही ?
कक्कय्या कें चर्मकार एवं
चेन्नय्या कें मोची कही ?
और यदि स्वयं कें हम ब्राह्मण कही
त कूडल संगम की हमर उपहास नहि करताह ?

ई वचन हुनका सभक लेल सम्पूर्ण धार्मिक समानता क घोषणा करैत अछि जे अपन जन्म क कारणें नहि, अपितु अपन मूल्य क कारणें ओकर अधिकारी छथि।

एहि सामाजिक सुधारक फलस्वरूप वसव कें प्रतिक्रियावादी शक्ति क घोर विरोध क सामना करै पड़लन्हि। एकर पश्चातो ओ महत्त्वपूर्ण प्रतिफल उत्पन्न करबा मे समर्थ छलाह, किएक तँ ओ कोनो स्थानीय सामाजिक सुधारक उपदेश नहि दैत छलाह। हुनक सामाजिक सुधार प्रेम एवं मात्र प्रेम पर आधारित छल। मानवताक प्रति हुनक प्रेम, विशेष रूपें निम्न एवं हारल तथा पददलित लोकनिक लेल असीम छलन्हि।

ओ स्वयं कें जनसाधारण मे सँ एक मानैत छलाह एवं ई कहबाक सीमा धरि सेहो जाइत छलाह—

जखन कक्कय्या चर्मकार हमर पिता छथि
एवं चेन्नय्या पितामह,
तखन हम की सुरक्षित नहि छी ?

इयैह ओ अनन्त प्रेम और अनुकम्पा थिक जे हुनका मानवताक रक्षक बना देने छल।

प्रेम एवं अनुकम्पा हुनक दर्शन एवं धर्म क नारा थिकन्हि। हुनक एक प्रसिद्ध वचन कहैत अछि—

अनुकम्पा क अभाव मे
ई कोन प्रकारक धर्म भ' सकैत अछि ?

समस्त जीवित वस्तु सभक प्रति
अनुकम्पा अनिवार्य अछि ।
धार्मिक आस्था क मूल अनुकम्पा थिक;
भगवान कूडल संगम ओकर चिन्ता नहि करैत छथि
जे एहि प्रकारक नहि अछि ।

हुनक समस्त सामाजिक एवं धार्मिक सुधार मानवताक प्रति एहि अनुकम्पा एवं सर्वव्यापक प्रेम पर आधारित अछि ।

वास्तव मे बसव सामान्यतः सुधार कहवै वला वस्तु पर विश्वास नहि करैत छलाह। हुनक विश्वास छलन्हि विकास पर। ओ मानव एकता क वेदान्ती आदर्श एवं ओकर स्वाभाविक दैवी प्रकृति क दिसि एक सम्पूर्ण पीढ़ी क अधिकाधिक विकास कैलन्हि। ओ जीवन क समग्र रूप मे अनवरत अवलोकन कैलन्हि। हुनक दृष्टि संघटित छलन्हि एवं तें ओ धर्म क नाम पर समाज क कोनो कृत्रिम विभाजन कें सहन नहि क' सकलाह। व्यक्ति सभक प्रगति मे बाधक कृत्रिम अवरोध अस्वीकार करैत ओ उग्रतापूर्वक एहन विसंगति एवं विषमता क घोर विरोध कैलन्हि। ओ सम्पूर्ण समानता स्थापित करबाक प्रयास कैलन्हि। ओ सभ कें नीचाँ उतारि कए समान नहि करै चाहैत छलाह, अपितु सभ कें जाति, धर्म वा योनि क भेद भावक विना समान अवसर दैत ऊपर उठा कए समान करै चाहैत छलाह ।

हुनक महान उद्देश्य एक एहन आदर्श समाज क निर्माण करब छल जाहि मे धार्मिक अनुसरण वा आध्यात्मिक विकास क लेल सभ लोक कें जीवन मे व्यवसाय पर विना कोनो विचार कैने, समानता अनिवार्यतः उपलब्ध हो। मनुष्य क मोल क निर्धारण ओकर व्यवसाय क अनुसारें करबाक प्रचलित सामाजिक मनोवृत्ति कें हुनका परिवर्तित करै पड़लन्हि। ओ घोषित करि देलथिन्ह जे व्यवसाय मे ऊँच वा नीच एहन कोनो वस्तु नहि होइछ। ई ईमानदारी एवं निष्कपटता थिक जे जीविका वा 'कायक' क साधना सभक गुण-अवगुण निश्चित करैछ ।

अतएव नीच कुल मे जन्म ल' कए हरलय्या, जे व्यवसाय सँ जुत्ता क मरम्मति करैत छलाह, हुनक—बसव—क समकक्ष मानल जाइत छलाह जे राज्य क मंत्री छलाह । एकर कारण छल हुनक आध्यात्मिक प्रगति जे बसवण्णा क प्रगति क समकक्ष छल। बसव एहन सामाजिक समानता पर दृढ़तापूर्वक विश्वास करैत छलाह और तें ओ अपन नवीन धर्म मे सभ कें समान अवसर प्रदान करैत छलाह ।

मुदा ई मन राखब आवश्यक अछि जे सब जुत्ता मरम्मत करै वला हरलय्या नहि छलाह। मात्र हुनकहि लोकनि कें भक्त क गोष्ठी मे प्रविष्ट कैल

गेल छल जे अवसर क उपयोग क' सकल छलाह एवं परिस्थिति सँ ऊपर उठि सकल छलाह तथा जनिक प्रवृत्ति आध्यात्मिक छल। ओ विचार शब्द एवं कृति मे शुद्ध भ' कए स्वच्छ जीवन यापन करैत छलाह।

वसव क महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई छलन्हि जे ओ जाति, धर्म वा योनि क कोनहु भेद-भाव विना, सभक लेल समान सामाजिक एवं धार्मिक अवसर सुलभ क' देलथिन्ह।

ई भ्रामक धारणा थिक जे वसवेश्वर सभ प्रकारक लोक कें वीर शैवमत क अनुयायी बना लैत छलाह। ओ जनैत छलाह जे मात्र वैह व्यक्ति भक्त बनि सकैत अछि जे व्यक्तिगत एवं सामाजिक नैतिकता पर आधारित आध्यात्मिक उद्देश्य क दृढ़तापूर्वक अनुसरण क' सकैत अछि। धर्मक नैतिक पक्षक विषय मे ओ बड़ दृस्तोषणीय छलाह। ओ ककरो अपना संग मात्र एहि लेल सम्मिलित नहि कैलन्हि जे ओ धर्म परिवर्तन क इच्छुक छलाह।

छल एवं चोरी, लोभ एवं हिंसा, धूर्त्तता एवं दुराचरण क ओ निर्दयतापूर्वक निन्दा करैत छथि तथा समाज मे निर्दोष चरित्र, सत्य-आचरण, विनम्रता और प्रसन्नतादायक शिष्टाचार एवं स्वच्छ स्वभाव कें उच्चतम प्राथमिकता दैत छथि। हुनक किछु वचन सभ सार्वभौम नैतिक संहिता निर्धारित कैने अछि जे पढ़ला सँ 'दस धर्मादेश' क वा पर्वत पर कैल गेल प्रवचन क भान होइछ। एतय मात्र एक वचन उद्धृत अछि—

तों चोरी वा हत्या नहि करह,
ने फूसि वाजह
तों ककरो पर क्रोधित नहि होअह,
ने कोनो आन मनुष्य सँ घृणा करह,
अपना पर घमंड सेहो नहि करह,
तों दोसरा पर दोषारोपण नहि करह,
ई तोहर अंतर्मुखी शुद्धता थिकह,
इएह हमर भगवान कूडल संगम कें
जीति लेबाक उपाय सेहो थिक।

ओ भीतर एवं वाहर क शुद्धता कें महत्त्व देत छथि। जखन जिज्ञासु क तन-मन, हृदय और आत्मा ओकर इच्छा एवं चेतना शुद्ध होइछ, मात्र तखनहि भगवान क प्रति ओकर भक्ति पूर्णता प्राप्त क' सकैछ।

एहि प्रकारें जे लोक सद्गुण क पथ क अनुसरण क' सकैत छलाह एवं भक्त मानल जाइत छलाह हुनके सभ कें नवीन आस्था मे प्रवर्तन, वा दीक्षा क उपरान्त ओ सम्मिलित करैत छलाह। वसवेश्वर घोषणा कैने छथि : एक बेर वीरशैव संघ मे हुनक प्रविष्ट भ' गेला पर, हुनक पुरान वर्ण एवं जाति स्वत:

जरि जाइछ एवं एक नवीन जीवन प्रारम्भ होइछ। नवीन धर्म मे दीक्षित अछूत यथा हरलय्या, नागमय्या, धुलय्या एवं ब्राह्मण जाति सँ परिवर्तित वाचरस, शान्तरस तथा मधुवरस कें ओ समान मानैत छलाह। एकहि धक्का मे ओ जन-समुदाय सभ क आध्यात्मिक पुनरुत्थान एवं हुनक सामाजिक एवं धार्मिक समानता संभव क' देल। हमर धारणा अछि जे एकरा पूर्व धर्म एतेक गम्भीर दृष्टिकोण एवं एतेक विशाल आकर्षण कहियो नहि प्राप्त कैने छल। ई देखि आश्चर्य होइछजे अछूत मदारा धुलय्या, चरवाहा तुरुगहीं रामन्ना, योद्धा जोधर मायन्ना एवं अनेकानेक आन सामान्य जन आध्यात्मिक क्षेत्र मे महत्तम उच्चतम स्थान पौलन्हि तथा वचन क रूप मे अपन गूढ़ अनुभव कें व्यक्त क' सकलाह।

समान महत्त्व क एक अन्य उपलब्धि छल जे महिला क पुनरुद्धार भेल। मैत्रेयी एवं गार्गी क युग बहुत पहिनहि समाप्त भ' गेल छल। महिला एवं शूद्र वेद वा आन धर्म शास्त्र सभक अध्ययन नहि क' सकैत छल। एहि परिस्थिति मे बसव साहसपूर्ण घोषणा कैलन्हि जे धर्म मे महिला एवं पुरुष क मध्य कोनो भेद-भाव नहि अछि। ओ निष्कलुष हृदय एवं गंभीर इच्छा क संग प्रविष्ट हैबाक आकांक्षी प्रत्येक पुरुष एवं महिला क लेल आध्यात्मिक अनुसरण क द्वार खोलि देने छलाह। तैं कतेको महिला संत कें हम देखि पबैत छी जाहि मे अक्का महा-देवी, अक्का नागम्मा, नीलाम्बिके, गंगाम्बिके, लक्कम्मा, लिंगम्मा एवं महादेवम्मा आदि प्रमुख छथि एवं जिनक नाम उन्नत आध्यात्मिक उपलब्धि सँ जुड़ल अछि।

एहि घोषणा क संगहि संग जे धर्म मे सभ कें समान अवसर प्राप्त छैक बसवेश्वर कें शास्त्रीय एवं राजकीय चंगुल सँ धर्म क मुक्ति क लेल संघर्ष करै पड़लन्हि। ओ पूछैत छथि : यदि अहाँ वेद पढ़ैत छी वा शास्त्र क श्रवण करैत छी त' ताहि सँ की भेल ? यदि अहाँ अपन मालाक दाना कें गनैत छी वा प्रायश्चित करैत छी त' ताहि सँ की भेल ? ओ पुनः एकरा अभिपुष्ट करैत छथि : यावत् धरि करनी कथनी क पालन नहि करब, भगवान कूडल संगम क प्रेम प्राप्त नहि हैत। कथनी एवं करनी क ई एकरूपता जिज्ञासु क सारभूत योग्यता थिक। बसवण्णा पुनः कहैत छथि :—

हम वेद एवं शास्त्र क
प्रचारक कें महान नहि कहैत छियन्हि
ने हुनकहि कहैत छियन्हि जे मरीचिका क
भ्रम मे नुकायल पड़ल छथि।

मात्र वैह महान छथि जे माया वा मरीचिका कें तिरोहित क' देने छथि। ई महानता हुनका लोकनि कें प्राप्त भ' सकैछ जे तन, मन एवं कर्म मे शुद्ध छथि।

ओ वेद मे निहित कर्मकाण्ड क प्रचण्ड रूप क विरोध कैलन्हि, मुदा उपनिषद मे प्रकट कैल गेल सत्य कें स्वीकार कैलन्हि । अनुकम्पावान बसव पूछैत छथि : अनुकम्पा क अभाव मे कोन प्रकारक धर्म भ' सकैत अछि ? पशु बलि-प्रदान संस्कार क विषय मे ओ कोनो समझौता नहि क' सकलाह । अपन एक वचन मे ओ धर्मपरायणता एवं अनुकम्पा क स्वर गुंजित करैत छथि । एहि ठाम ओ एक छागर कें सम्बोधित करैत छथि जकरा बलि प्रदान क अग्नि क दिसि ल' गेल जा रहल छैक—

हे बकरा चिचियावह, चिकरह
जे वेद क अनुसार
तोहर हत्या कैल जा रहल छन्हु ।
वेद पाठी लोकनिक समक्ष,
चिचियावह आ चिकरह,
शास्त्र क श्रोता लोकनिक समक्ष
चिचियावह, चिकरह,
भगवान कूडल संगम ओकर उचित शुल्क लेथिन्ह
जकरा लेल तों कनैत छह ।

बुद्ध सेहो ठीक एही प्रकारें करुणा सँ द्रवित भेल छलाह एवं ओहो एही प्रकारें बलिदान तथा आन संस्कार सभक विरोध कैने छलाह । बसवण्णा एहि सभ अनुष्ठान एवं एकरा लेल उत्तरदायी पंडागिरी क विरुद्ध विद्रोह क' देने छलाह ।

बसवण्णा एक मूलभूत भगवान क प्रति एकाग्र आस्था एवं सर्वोच्च प्रेम क समर्थन करैत छलाह । ओ अनेक देवत्व वा अनेकेश्वरवाद कें स्वीकार नहि करैत छलाह । हुनक कठोर एकेश्वरवाद अनेक वचन सभ मे अभिव्यक्त भेल अछि । ओ कहैत छथि—

ईश्वर मात्र एक छथि, नाम अछि हुनक अनेक
पतिव्रता पत्नी जनैत अछि मात्र एक स्वामी कें ।

तुच्छ स्वार्थ क लेल मारी एवं मसानी सन शताधिक देवी-देवता सभक पूजन क ओ आलोचना करैत छथि । ओ व्यंग्यपूर्वक कहैत छथि जे "कूडल संगम भगवान, हमर शरण दाता बनू" क एकहि आघात शताधिक मार्टक बासन क समान जेना बीरैया, केतैया एवं ओहि आन सम देवता कें चूर-चूर करबाक लेल पर्याप्त अछि जे दुधारि गाय, कनैत नैना एवं गर्भिणी महिला आदि कें पकड़ि कए पीड़ित करैत छथि । एहि ठाम बसवण्णा भय तथा अंधविश्वासक धर्म कें प्रेम और निस्वार्थ निष्ठा क धर्म सँ स्पष्ट रूपें पृथक क' दैत छथि ।

वीरशैव पंथ क एही विचार धारा क अनुसार ओ इष्टलिंग क रूप मे एक

भगवान क पूजा क समर्थन करैत छलाह। एहि आस्था क अनुरूप हुनक भगवान सम्बन्धी धारणा एतेक उदात्त एवं विश्वासजनक अछि जे महान चिन्तक लोकनि कें सेहो आकृष्ट क' लैत अछि—

हम जाही दिसि तकैत छी,
हे भगवान, अहीं दखबा मे अबैत छी,
समस्त परिव्यापक अंतरिक्षक रूप
अहाँ छी सर्व व्यापक नयन,
हे भगवान, अहीं सार्वभौम आकृति (मुख) छी,
हे भगवान, अहीं सभक हाथ सेहो छी,
अहीं चरण सेहो छी, कूडल संगम भगवान।

ओ ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रक त्रिमूर्तियो कें अतिक्रमण करैत छथि। सर्वोच्च सर्वशक्तिमान स्वयं इष्टलिंगक रूप धारण कैने छथि एवं गुरु क कृपा सँ हुनक पूजा होमय लागल अछि।

वीरशैव मत मे प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपन शरीर पर धारण कैल जाय वला इष्टलिंग केन्द्रीय विषयवस्तु बनैत अछि। एहि ठाम एहि पर विस्तार पूर्वक विचार क आवश्यकता नहि अछि। ई भगवान क एक निराकार रूपक परिकल्पना थिक। शून्य वा पूर्णताक पराकाष्ठा क एक मूर्ति बना कए गुरु अपन शिष्य कें इष्टलिंगक रूप मे दैत छथिन्ह। शिष्य क कान मे ओ छओ अक्षर वला मंत्र वा षडक्षरी फूँकि दैत छथिन्ह। ई इष्टलिंग, जिनक पूजा नित्य तरहत्थी पर केल जाइत अछि, जिज्ञासुक सम्पूर्ण आत्मा कें आक्रान्त क' दैत छथि एवं ओकरा विकसित भ' कए प्राणलिंग और भावलिंग क स्थिति धरि पहुँचबा मे मदति करैत छथि। इयैह तथ्य पहिल अध्याय मे बसवेश्वरक भक्तिक विकास मे सहो हमरा लोकनि देखि चुकल छी। बसवण्णा जोर दए कहैत छथि जे जिज्ञासु कें अविभक्त आस्था क संग अपन सभ शक्ति कें मात्र इष्टलिंग क आराधना एवं पूजा मे केन्द्रित क' देबाक चाही।

एहि प्रकारें ओहि मन्दिर, पूजा एवं पंडागिरी कें हटैबा मे बसव सफल भेलाह जे शोषण क साधन एवं सदन बनि गेल छल। भक्त एवं भगवान क मध्य पूजा एक व्यक्तिगत घनिष्ठता थिक। ई घनिष्ठता इष्टलिंग मे प्रत्यक्षतः प्राप्त होइछ कियैक तँ लिंग एवं भक्त क मध्य कोनो मध्यस्थ नहि रहैछ। आन लोक द्वारा मन्दिर मे पूजा करैबाक प्रबन्ध करैबा मे कोनो पुण्य नहि छैक। बसवेश्वर कहैत छथि :—

प्रेम मे लीन हैब वा अपन भोजन करब
कोनो आन दूत सँ कि करायल जा सकैछ ?

लिंग क समस्त संस्कार एवं समारोह,
प्रत्येक कें स्वयं करबाक चाही।
ई कोनो दूत क माध्यमे कखनहुँ नहि कैल जाइछ।
हे कूडल संगम !
अहाँ कें ओ कोना जानि सकैछ भगवान,
जे मात्र औपचारिकता क लेल ई करैत अछि।

एहि प्रकारें दलाल सभ द्वारा भगवान क पूजन क कठोर निन्दा कैल गेल अछि।

धार्मिक ई तर्कवाद जन-समुदाय कें जीवन क प्रति एक नव दृष्टिकोण देलक। ओहि कर्म सिद्धान्त कें ओ नवीन रूप सँ प्रकाशित कएल जे मनुष्य सभ कें एहि भाग्य वादी अकर्मण्यता क दिसि ल' जाइत छल जे प्रत्येक वस्तु पूर्व जन्म क कर्म क फल थिक वा मनुष्य विश्वासघाती भाग्य क दया पर आश्रित एक असहाय कठपुतरी मात्र थिक। एहि पराजयवादी दृष्टिकोण क विरुद्ध बसवण्णा प्रचण्ड रूप सँ विद्रोह कैलन्हि। ओ एक नव शक्ति एवं तेज क संचार क' देलथि जाहि सँ पूर्वजन्म क कर्म आब मेटा जाइक तथा लोक अपन वर्तमान एवं भविष्य क काज द्वारा आत्मविश्वास क संग अपन भविष्यक निर्माण क' सकय।

बसव बुद्धिवादी छलाह एवं मात्र ओही आस्था क अनुमोदन करैत छलाह जे आध्यात्मिक लक्ष्य क प्राप्ति मे सहायक छल। ओ पारम्परिक रूढ़ि एवं अन्धविश्वास क समर्थन कथमपि नहि करैत छलाह। विशाल जन समुदाय क मस्तिष्क मे अनेक अन्धविश्वास जमल छल यथा—फलित ज्योतिष, नीक वा अधलाह शकुन एवं दिन, सप्ताह वा नक्षत्र क प्रभाव। जनगण डेग-डेग पर, प्रत्येक साधारण कारण क लेल कोनो अलौकिक शक्ति क दिसि असहाय रूप सँ तकबाक अभ्यस्त छल। जनता सभ बड़ सीधासादा छल एवं आडम्बर पूर्ण वस्त्र पहिरि कए घूमै वला पंडा एवं संन्यासी लोकनिक आडम्बर कें चिन्हबा मे असमर्थ छल। बसव एहि धार्मिक शोषण क दृढ़तापूर्वक भर्त्सना कैलन्हि। ओ दृढ़तापूर्वक ई घोषणा करैत छथि—

जखन कखनहुँ अपन हृदय जकरा कहै
ओकरहि शुभ समय बुझू,
सोचू जे अनुकूल लक्षण उपस्थित अछि,
एवं ई जे मिलन पूर्व निर्धारित अछि,
ई जे चन्द्र एवं नक्षत्र कृपावान छथि
एवं ई जे कालिह सँ आइ नीक अछि
ई उपलब्धि

जे भगवान कूडल संगम क उपासक लोकनि कें होइत छन्हि
से अहाँक थिक ।

एक आन वचन मे ओ कहने छथि जे ओकर सभ गोट दिन समान अछि जे कहैत अछि—शिव हमर शरण थिकाह ओ प्रमाद रहित हुनक आराधना करैछ। कोनो जिज्ञासु कें सर्वथा हिनक भक्त नहि हैबाक चाही, ओकरा भगवान क भक्त हैबाक चाही एवं सर्व शक्तिमान दैवी सत्ता मे आस्था रखबाक चाही।

बसवण्णा अपन वचन क सत्यता अपन जीवन-पथ मे चरितार्थ कैलन्हि—

हम नहि जनैत छी
दिन वा सप्ताह की थिक,
राशिचक्र क एक चिह्न,
शुभ अछि की नहि अछि,
हमरा लेल राति वा दिन
एक विभाजन थिक,
भक्त क जाति एक अछि
अभक्तक दोसर ।

हुनका लेल सभ शकुन शुभ अछि, सभ दिन पवित्र अछि। ई बात ओहने भेल जेना केओ महान मेरु पर्वत क छाया मे शरण लेबाक पश्चात् अपन छाया क अन्वेषण क' रहल हो। जे सभ लोक महान मेरु अर्थात शिव क चरण ग्रहण कैने छथि हुनका सभक लेल शुभ और अशुभ क मध्य अन्तर कतय छन्हि।

अतएव ओ ओहि प्रत्येक वस्तुक विरुद्ध विद्रोह कैलन्हि जे कारणसंगत नहि छल। ओ पूर्व क बांझ रूढ़ि मे प्रचलित शारीरिक क्लांति एवं मानसिक उदासीनता क दशा कें परिवर्तित करबाक प्रयत्न कैलन्हि। ओ धर्मशास्त्र वा ओहि विषय मे कोनहु शास्त्र कें एहन पवित्र आदर्श नहि मानैत छलाह जकरा बिना चुनौती वा आपत्ति कैने स्वीकार करब अनिवार्य हो। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग क पापाचार कें ओ सहन नहि क' सकलाह। जाति एवं वर्णक समस्त भेदभाव क विरुद्ध ओ प्रबल आन्दोलन उठौलन्हि। ई आन्दोलन हुनक युग क समाज क परिस्थिति सभ मे बड़ क्रान्तिकारी प्रतीत भेल ।

ओ विचार क शुद्धता एवं कार्य क शुद्धता कें सर्वाधिक महत्त्व देलन्हि। हुनका लेल साधन और साध्य क पवित्रता क समान महत्त्व छल । विचार एवं कार्य क शुद्धता सँ सम्पन्न एहि आध्यात्मिक अनुशासन कें ओ 'कायक' कहैत छलाह । हुनक समकालीन शरण सभक उपलब्धि क प्रसंग मे कायक विशेष महत्त्व प्राप्त क' लेने छल ।

4

कायक क सन्देश

कायक शब्द क अर्थ अछि सत्यनिष्ठ शारीरिक परिश्रम, मुदा ई अपन जीविका क लेल परिश्रम क अपेक्षा और बहुत किछु थिक। कहल जा सकैछ जे कायक क महत्त्व क धारणा व्यावहारिक दर्शन मे बसवण्णा क एक विशिष्ट योगदान थिक। बसवण्णा एवं आन सभ शरण द्वारा एकर एहि प्रकारें व्यवहार एवं प्रचार कैल गेल जे ई एक नव आयाम प्राप्त क' लेलक। ओ एहि मे विचार एवं कार्य क एक सम्पूर्ण समन्वयक भाव फूंकि देलथिन्ह। ओ स्वयं विचारक एवं कार्यक व्यक्ति छलाह। ई धारणा एतेक विस्तृत अछि जे सार्वभौम उपयोग मे सक्षम अछि।

प्रथम स्थान मे ई निर्वाहिक लेल एक व्यवसाय वा जीविका थिक। गाँधी जी क कथनानुसारें ई 'रोटीक श्रम' थिक। गाँधी जी कहैत छथि प्रकृति अपन भृकुटि क स्वेद सँ हमरा सभ कें अपन रोटी अर्जित करबाक लेल नियत कैलक अछि। दैहिक वा शारीरिक श्रम धनी अथवा निर्धन सभक लेल कोनो ने कोनो रूप मे अनिवार्य अछि। तखन ई उत्पादक श्रम क स्वरूप कियैक नहि धारण क' सकैछ ? बसवेश्वर ओही स्वर सँ घोषणा करैत छथि जे प्रत्येक व्यक्ति कें किछु एहन कार्य करबाक चाही जे समाज क आवश्यकता सभ कें पूर्ति करबा मे सहायक हो। चाहे केओ भक्त होथि वा गुरु अथवा जंगम, किनकहुँ आन व्यक्तिक श्रमक शोषण करैत परजीवीक निरर्थक जीवन-यापन करबाक कोनो अधिकार नहि छन्हि। एकर अन्तर्निहित सिद्धान्त ई अछि जे प्रत्येक मनुष्य कें अपन आध्यात्मिक एवं भौतिक प्रगति क अनुसरण अपन 'कायक' क माध्यमे करबाक चाही। भिक्षा-वृत्ति तथा आलस्य क लेल समाज मे कोनो स्थान नहि छैक।

कायक क एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष, जकर बसव समर्थन करैत छलाह ओ छल लोकतांत्रिक। ओ ओहि कर्म-सिद्धान्त क विरुद्ध विद्रोह क' देलथिन्ह जे ई आदेश दैत छल जे प्रत्येक मनुष्य क व्यवसाय जन्म द्वारा पूर्व निर्धारित अछि।

बसवण्णा जन्म, योनि वा व्यवसाय क आधार पर कोनहु भेदभाव क निन्दा करैत छलाह ।

ई समाज मे एक महान क्रान्ति छल । ई जनगण क मन मे आध्यात्मिक एवं सामाजिक जागृति उत्पन्न क' देलक । प्रारम्भिक रूप मे कायक मनुष्य सभ क मूल्य ओकर अपन व्यवसाय द्वारा निर्धारित करबाक स्वभाव कें परिवर्तित क' देलक । बसवेश्वर ई घोषित क' देलन्हि जे कोनो एक व्यवसाय दोसर व्यवसाय सँ श्रेष्ठ वा निकृष्ट नहि अछि एवं मात्र सत्यवादिता तथा निष्कपटता जीविका-साधन क गुण अवगुण निश्चित करैत अछि । ई कायक क मूल स्वर थिक । बसव द्वारा घोषित सभ व्यवसाय क समानता कायक क दोसर महत्त्वपूर्ण पक्षक दिस ल' जाइत अछि ।

ई जीवन क प्रति एक नवीन दृष्टिकोण स्थापित करैत अछि । कायक मे परिश्रम क गरिमा तथा देवत्व दुनू एकहि संग छैक । अपन जीविकोपार्जन मात्र एक व्यवसाय नहि थिक । ई परम अनासक्ति क संग कैल जाय वला कार्य थिक एवं ओकरा ओहि समाज तथा व्यक्ति दुनू क आवश्यकता कें पूर्ति करबाक चाही ।

कोनो व्यक्ति क अर्जन मात्र ओही व्यक्ति क भौतिक तथा आध्यात्मिक प्रगति क उन्नयन मे प्रयुक्त नहि हैबाक चाही, अपितु समाज क कल्याण मे सेहो ओकर उपयोग ओहि त्रिपक्षीय दसोहा क रूप मे हैबाक चाही अर्थात् गुरु, लिंग एवं जंगम क प्रति समर्पण । ई तखनहि सभव जं व्यवसाय कायक अथवा पुण्य कर्म अथवा पूजा बनि जाय ।

बसवेश्वर बिज्जल क मंत्री-पद एहि लेल नहि स्वीकार कैने छलाह जे अपना लेल धन-सम्पत्ति जमा करी । ओ भगवान क नाम पर सत्य भाव सँ स्पष्ट करैत छथि जे ओ एक राजा क अधीन सेवा करब स्वीकार कैलन्हि :—

यदि प्रातः काल उठि एवं अपन आँखि मलैत,
हम अपन पेट एवं अपन वस्तुक लेल,
अपन पत्नी तथा सन्तान क लेल,
चिन्तित होइत छी,
त' हमर मने हमर मन क साक्षी होअओ ।

ओ अपन वा परिवार क चिन्ता नहि करैत छथि, आ ने ओ मंत्रि-पद क वैभव और बल क प्रति आसक्त छथि—

यदि निकृष्टतम चण्डाल क घर जा कए
हम निकृष्टतम सेवा नीक जकाँ करैत छी,
हमर एक मात्र चिन्ता आछि, अहाँ क महिमा,
मुदा यदि हम अपन पेट क लेल चिन्तित होइत छी,

हे भगवान कूडल संगम,
हमर माथ कें एकर मोल चुकाव' दियौक ।

ओ निकृष्टतम सेवा करबाक लेल निकृष्टतम चाण्डाल क घर जैबाक लेल तैयार छथि, मुदा ई सेवा ओ नीक जकाँ करताह । एहि प्रकारें कोनो काज जे संसार मे कल्याण क लेल हाथ मे लेल जाइत अछि एवं जे नीक जकां पूरा कैल जाइत अछि, कायक थिक। एहन कायक भगवान क पूजा समान अछि।

एही अर्थ मे शरणजन कहैत छथि जे कायक कैलास (शिवक निवास) थिक। बसवण्णा एवं आन शरण लोकनिक द्वारा निर्धारित एहि प्रकार क आदर्श उत्तर गाँधी-युग मे रहनिहार हमरा लोकनिक लेल बेसी बोधगम्य अछि।

वास्तव मे गाँधीजी क रोटी-श्रम धारणा तथा बसवण्णा क कायक धारणा मे अद्‌भुत मेल अछि । गाँधीजी रस्किन क महान ग्रन्थ 'अन्टु दिस लास्ट' मे अपन गहनतम विश्वास कें परिलक्षित होइत अनुभव कैलन्हि एवं ई हुनका एना वशीभूत क' लेलक जे हुनक जीवने बदलि गेल । ओ पुस्तक क सिद्धान्त सभ कें व्यावहारिक रूप देबाक निर्णय कैलन्हि । गाँधीजी क अनुसारें पुस्तक क मुख्य शिक्षा सभ एहि प्रकारें अछि :—

1. सभक उपकार मे व्यक्ति क उपकार अछि ।
2. कोनो अधिवक्ता क (ओकील क) काजक मोल वैह छैक जे कोनो नौआ क काज क मोल। किएक तँ सभ कें अपन कार्य सँ अपन जीविका अर्जित करबाक समान अधिकार छैक ।
3. श्रम क जीवन अर्थात हरवाह तथा शिल्पकारक जीवन जीवाक योग्य थिक।

हम देखैत छी जे ई सभ सिद्धान्त बसवण्णा एवं आन शरण लोकनि द्वारा प्रतिपादित मत कायक क मर्म थिक ।

पहिल सिद्धान्त 'सभक हित मे व्यक्ति क हित समाहित अछि' मे बसव दृढ़ विश्वासी छलाह। त्रिपक्षीय 'दसोहा' अर्थात् गुरु, लिंग और संगम कें समर्पण मुख्यतः एही सिद्धान्त पर आधारित अछि। ओ कहैत छथि जे हमरा सभ कें काया, बुद्धि और अर्जन क्रमशः गुरु, लिंग एवं जंगम कें समर्पित क' देबाक चाही। गुरु वा शिक्षक लिंग अर्थात् पूजनीय विग्रह क रहस्य प्रकट करैत छथि । अतएव ई दुनू आध्यात्मिक मार्ग सँ व्यक्तिक हितक साधन करैत छथि ।

मुदा जंगम क अर्थ भिन्न अछि। बसव एहि शब्द कें एकर विस्तृततम अर्थक संग अपनौने छलाह। हुनका लेल ई कोनो विशेष जाति वा पंथ नहि थिक। ओ पूछैत छथि लिंग मे कठोरता छैक ? जंगम मे की कोनो जाति होइछ ? जंगम ओ थिक जे सर्वव्यापी भ' गेल हो। यथार्थ जंगम ओ थिक जे अपन अहंकार क

नाश क' कए समस्त संसार कें अंगीकार करैत ओहि सँ ऊपर उठि जाइत अछि। अंतर्दर्शी ज्ञान क माध्यम सँ अन्तरिक्षीय चेतना मे प्रविष्ट हैवाक उपरान्त जंगम एक व्यक्ति नहि रहि जाइछ।

बसवेश्वर क जंगम सम्बन्धी धारणा मे एक प्रकार सँ समस्त जंगम सहित सम्पूर्ण संसार सम्मिलित प्रतीत होइछ। एहि प्रकारें जंगम क 'दसोहा' बड़ विस्तृत भ' जाइछ जे समाज क प्रत्येक प्रकार क सेवा एहि मे सम्मिलित होइछ। अपन व्यवसायक माध्यम सँ अर्जित मुद्रा समाज-कल्याण क लेल जंगम क समक्ष समर्पित क' देवाक चाही। "हमर बन्धु, तों जे एकटक दर्पण कें देखि रहल छह, जंगम कें देखह," बसवेश्वर कहैत छथि, "कियैक तँ ओकर भीतर मे लिंग क वास छैक।" कूडल संगम क संदेश कहैत अछि : 'चल एवं अचल एक अछि।"

यावत् धरि एकर अवधारणा नहि भेल तावत् दर्शन क विषय मे गाल बजैबाक कोनो उपयोग नहि छैक। शब्दक जंजाल मे की राखल छैक ? यावत् धरि अहाँ जंगम पर ओकर स्नान क लेल जल नहि ढारैत छी, पूजाक समय लिंग पर जल ढारब वा अभिषेक सँ की लाभ ? अतः बसवण्णा हमरा लोकनि कें मानव हृदये मे विराजमान दैवी शक्ति देखवाक परामर्श दैत छथि। एक ठाम अपन वचन मे ओ एकरा सुन्दर जकाँ एहि शब्द मे प्रस्तुत कैने छथि :—

पाथरक एक साँप देखि कए, ओ कहैत छथि :
दूध दियौ, अवश्य दियौ,
एक असली साँप देखि कए, ओ कहैत छथि :
"एकरा मारि दियौ,"
यदि कोनो जंगम, जे भोजन क' सकैछ—
पहुँचैत अछि,
ओ कहैत छथि : "दूर भ' जो"
एवं ओहि लिंग क समक्ष व्यंजन परोसैत छथि,
जे भोजन नहि क' सकैत अछि :
यदि तों हमर कूडल संगम क शरण सभक—
अपमान करैत छह,
तों पाथर सं टकरावै वला माटिक एक—
ढेला बनि जैवह।

लिंग पूजा तखनहि पूर्णता प्राप्त करैत अछि जखन एहि प्रकारक सार्वभौम जागृति उत्पन्न होइत छैक। निम्नांकित पंक्ति मे ओ इयैह तथ्य संकेतित करैत छथि—

यदि ई जानि कें जे जड़ि गाछक मुख थिक,
अहाँ ओकर जड़ि कें सींचैत छियैक ।
देखू, ऊपर, ऊँचाई पर अँखुआ प्रकट होइछ,
यदि ई जानि कए जे जंगम लिंगक मुँह थिक,
अहाँ ओकरा भोजन दैत छिऐक,
बदला मे ओ अहाँ कें एक प्रीति-भोज
दैत अछि ।

लिंग एवं जंगम क भक्ति क एहन संश्लेषण क फलस्वरूप व्यक्ति तथा समाज क संश्लेषण होइत अछि। बसवण्णा क आध्यात्मिक लक्ष्य क ई विचित्र स्वभाव अछि। लिंग पूजा क फल अर्थात वैयक्तिक कल्याण जंगम क पूजा अर्थात् सर्व कल्याण मे अछि। एहि प्रकारें हुनक कायक धारणा परस्पर निर्भर एवं एक दोसर क पूरक व्यक्तिगत कल्याण तथा समाज-कल्याण क संश्लेषण परिलक्षित एवं प्राप्त कैलक ।

गाँधीजी क अनुसारें रस्किन क दोसर सिद्धान्त ई अछि जे ओकील क काज क मोल नौवा क काजक मोल क समान अछि। कायक क आधार इयैह थिक। बसवेश्वर एकरा बड़ा स्पष्ट क' देने छथि जे व्यवसाय सभ मे ऊँच आ नीच एहन कोनहु वस्तु नहि अछि। कायक क गरिमा काजक प्रकार मे नहि, अपितु ओहि भावना मे निहित अछि जकर संग काज कैल जाइछ। भरलैया क जुत्ता ठीक करबाक व्यवसाय ओतवे महत्त्वपूर्ण अछि जतवा मंत्री क रूप मे बसवेश्वर क व्यवसाय ।

चाहे कोनहु काज हो, जखन ओकरा समर्पण एवं चरम विनम्रता क भावना क संग कैल जाइत छैक त' ओ पूजा बनि जाइत अछि। बसवण्णा क युग मे ई धारणा मात्र आदर्श नहि रहि गेल छल। बसवण्णा क चमत्कारी प्रभाव सँ बारहम शताब्दी क शरण लोकनि एकरा कार्य मे परिणत क' देलन्हि। ओ शरण सभ कें शताधिक प्रकार क विभिन्न व्यवसाय क अनुसरण करबाक लेल प्रोत्साहित करैत रहलाह। एकर प्रयोजन परिश्रम क गरिमा एवं महत्ता क वृद्धि मात्र नहि छल, अपितु समाज कें अपन योगदान देव सेहो छल ।

एहि प्रकारें हम सभ शत-शत शरण लोकनि कें भिन्न-भिन्न व्यवसाय मे संलग्न देखैत छी : भडिवाल मचय्या (धोबी), नुलिया चंडय्या (डोरी बाँट' वला), अंबीगर चौडय्या (मलाह), मैडर केतय्या (छिट्टा बनावै वला), हडपद आपन्ना (नौवा), तुरुगहीं रामन्ना (चरवाहा), सुंकद वेंकन्ना (करपाल), मदारा धुलैय्या (चंडाल), तलवर कामिदेव (पहरुआ), गणद कन्नप्पा (तेली), वैद्य संगन्ना (वैद्य), सूजीकायाकदा रामन्ना (दर्जी), वसीकायकद बासवप्पा (कमार), कोट्टानाद रेमाव्वे (धंनकुट्टा), मौलिगे माय्या (लकड़हारा) तथा

एही प्रकार क अन्यान्य। औहि सभक नाम क पाछाँ लगाओल गेल शब्द ओहि कायक क संकेत थिक जकरा ओ लोकनि अपनौने छलाह। पशु चरैवाक, वस्त्र धोयवाक, तेल निकालवाक एवं जुत्ता बनैवाक व्यवसाय करै वला शरण लोकनि सामाजिक-धार्मिक संस्थान अनुभव मंडल मे वसवण्णा क संग समकक्षता क संग बैसि सकैत छलाह तथा विचार विमर्श मे भाग ल' सकैत छलाह। ई एक सराहनीय उपलब्धि छल तथा एक एहन सुधार सेहो, जकरा आइयो धरि पूर्णरूपें लागू नहि कैल जा सकल अछि।

कायक क एक और पक्ष अछि : एकर माध्यमे शारीरिक श्रम कें देल गेल महत्त्व। शारीरिक आवश्यकता सभक पूर्ति स्वयं शरीर सँ हैवाक चाही। ई रस्किन द्वारा देल गेल एहि सिद्धान्त क अनुकूल अछि जे श्रम क जीवन जीवाक योग्य जीवन थिक। बसवण्णा शारीरिक श्रम कें उच्चतम सीमा धरि पहुँचा देलन्हि एवं ओ स्वयं यथार्थतः एहि आदर्श क अनुसार आचरण करैत रहलाह। यद्यपि ओ एक मंत्री छलाह, तैयो ओ स्वयं कें कठोर परिश्रम क कार्य क लेल अर्पित क' देने छलाह। और कहैत छथि :

एक हाथ मे एक झाड़ू लेने
माथ पर कपड़ा लपेटने,
हम एक घरेलू टहलुआ क बेटा छी,
हे भगवान कूडल संगम,
हम ओहि नौरी क बेटा छी
जे दहेज मे पलंग क संग आयल छल।

ई एक सारगर्भित उक्ति थिक जाहि मे ओ स्वयं कें निकृष्ट लोक क समकक्ष कहैत छथि तथा तथाकथित निकृष्ट काज मे हुनका लोकनिक संग हिस्सा लैत छथि।

ई हमरा लोकनि कें गाँधीजी क एक उक्ति क स्मरण करबैत अछि : "हमरा सभ कें अपन नेनपने सँ अपन मन मे ई विचार अंकित क' लेबाक चाही जे हम सभ मेहतर थिकहुँ। जे एहि तथ्य कें बूझि लेने अछि ओहि व्यक्ति क लेल ई काज करबाक सुगमतम मार्ग ई छैक जे ओ रोटी क श्रम ओ मेहतर क काज करैत प्रारम्भ करैत अछि। एहि प्रकारें बुद्धिमत्ता पूर्वक अपनाओल गेल मेहतर क काज मनुष्य क समानता क वास्तविक गुणावगुण ज्ञान-विवेचन करबा मे सहायक हैत।" इयैह ओ भावना थिक जकरा बसवण्णा कायक मे फूकैत छलाह एवं जे हमरा लोकनि कें गाँधीजी मे सेहो देखि पड़ैत अछि।

गाँधीजी 'रोटी श्रम' क संग प्रबुद्ध क विशेषण जोड़ैत छथि तथा दक्ष भए कहैत छथि जे मात्र प्रबुद्ध 'रोटी श्रम' सामाजिक सेवा बनि सकैत अछि। असल कायक सेहो इयैह थिक। समस्त व्यवसाय एवं उद्योग सभ कें कायक नहि कहल

जा सकैछ।

'अनुभव मंडप' मे एक बेरि ई परिस्थिति उत्पन्न होइछ जे आयदक्की मरय्या, जकर कायक, खेत मे छिड़ियाओल धान क दाना एकत्र करबाक छल, एक प्रश्न उठबैत अछि एवं कायक क विषय मे अपन संदेह व्यक्त करैत अछि। जखन ई कहल जाइत अछि जे कायके कैलास थिक, वा काजे पूजा थिक तखन गुरु, लिंग तथा जंगम क प्रयोजन होइते छैक। कियैक ? ओकर एहि प्रश्न पर अनुभव मंडप मे विस्तार पूर्वक विचार-विमर्श होइत अछि। अन्त मे अल्लम प्रभु कायक क स्वभाव क व्याख्या करैत छथि और ओकरा संक्षेप मे प्रस्तुत करैत छथि। ओ कहैत छथि जे काज तखनहि कायक होइत अछि जखन ओकरा नितान्त निःस्वार्थ तथा अनासक्त भाव सँ कैल जाइछ। काज क माध्यम सँ एहन आत्म-त्याग क स्थिति मे पहुँचबाक लेल किछु अभ्यास एवं अनुशासन अनिवार्य अछि एवं ताहि हेतु त्रिपक्षीय दसोहा अर्थात तन मन तथा धन कें गुरु, लिंग एवं जंगम क ऊपर समर्पण करब अपेक्षित अछि।

अल्लम प्रभुक एहि शब्द पर मनन-चिन्तन करैत मारैय्या एक दिन अपन कायक बिसरि जाइत छथि। तखन हुनक पत्नी लक्कम्मा अपन कर्त्तव्य बिसरि जैबाक कारणें हुनक भर्त्सना करैत छथिन्ह। अतएव मारय्या अपन कायक पर जाइत छथि। जखन ओ घुरैत छथि तखन लक्कम्मा चकित भ' कए देखैत छथि जे ओ सामान्य सँ बेसी धान क दाना ल' कए आयल छथि। ओ हुनका स्मरण करबैत छथि जे बेसी धान क लोभ हुनक कायक नहि भ' सकैछ। ओ आग्रह करैत छथि जे मारय्या बेसी आनल धान कें ओतहि छिड़ियाय आबथु जतय सँ ओ अनने छथि। ई कायक क एक नितान्त अर्थ पूर्ण पक्ष प्रकट करैत अछि। यदि प्रत्येक व्यक्ति मात्र ओतबे संग्रह करै जतबाक ओकरा आवश्यकता छैक तँ एहि संसार मे ककरहु अभाव क पीड़ा नहि भ' सकैत छैक।

एहिठाम हमरा सभ कें महात्मा गाँधी क अविस्मरणीय शब्द सभक स्मरण होइछ : हमरा लोकनिक दिन-प्रतिदिन क आवश्यकता सभक लेल प्रकृति पर्याप्त उपजा दैत अछि, एवं प्रत्येक व्यक्ति अपना लेल पर्याप्त सँ बेसी किछु नहि लैत अछि। तैं एहि संसार मे दरिद्रता नहि रहत, अनशन कए केओ नहि मरत। एहि प्रकारें यदि सब केओ ओतबे लैत अछि जकर ओकरा लेल आवश्यक छैक तथा शेष भाग अपन सहजीवी लोकनिक कल्याण मे समर्पण क भावना सँ उपयोग करैत अछि त' संसार मे सम्पूर्ण सामंजस्य एवं व्यवस्था स्थापित भ' जाइत। जकर व्यवहार बसवेश्वर क युग मे लक्कम्मा सन साधारण महिला क माध्यमे कैल जाइत छल, ई अर्थ कायक मे निहित अछि।

वसवण्णा द्वारा परिलक्षित समाज एक आत्मनिर्भर समाज छल जाहि मे जाति पंथ वा योनि क कोनो भेदभाव नहि छल। ओहि मे धनी एवं निर्धन क

सेहो कोनो भेद नहि छल। ओ स्वयं कें निर्धन, पतित, निकृष्ट तथा कमजोर वर्ग क लोक सभ जकाँ मानलन्हि। हुनक आग्रह छलन्हि जे सभ कें स्वेच्छापूर्वक ओहि परिश्रम कें करबाक चाही जे निर्धन क लेल अनिवार्य अछि एवं दरिद्रता तथा सामाजिक अन्याय कें समाप्त क' देबाक चाही।

बसवण्णा असंग्रह कें सर्वाधिक महत्त्व दैत छलाह एवं हुनक कायक क धारणा एही सिद्धान्त पर आधारित छलन्हि। एतय एक गोट रुचिकर आख्यान अछि। कहल जाइत अछि जे ई बसवेश्वर क जीवन मे घटित भेल छल। ई एही प्रकारें भेल जे एक राति बसवण्णा क घर मे एकटा चोर ढुकि गेल। घर मे कोनो वस्तु नहि पाबि ओ बसवण्णा क पत्नी नीलाम्बिके क कर्णफूल छिनबाक प्रयत्न कैलक। ओ अकस्मात् जागि गेलीह एवं चिचियाय लगलीह। बसवण्णा उठि कए ठाढ़ भ' गेलाह और पत्नी सँ ओ कर्णफूल चोर कें द' देबाक आदेश दैत बजलाह : यदि कोनो चोर अपना सँ कोनो पैघ चोर क घर मे ढुकि गेल अछि त हम ओकरा स्वयं कूडल संगम क अतिरिक्त आन किछु नहि मानि सकैत छी। ओ स्वयं कें एक वृहत्तर चोर कहैत छथि किएक तँ किछु एहन वस्तु हुनका लग छल जे साधारण लोकक लग नहि छलैक। ई विचार गांधीजी क विचार क अनुकूल अछि जकरा एहि प्रकारें व्यक्त कैल गेल अछि : "हमर मत अछि जे एक प्रकार सँ हमहुँ सभ चोर थिकहुँ। यदि हम कोनो एहन वस्तु लैत छी जकर तुरन्त उपयोग क आवश्यकता हमरा नहि अछि तँ ओ हम कोनो आन व्यक्ति सँ चोरी करने छी।"

एहि प्रकारें बसवण्णा एवं गाँधी क मध्य सामाजिक दृष्टिकोण तथा रोटी-श्रम क संदेश मे असाधारण समानता अछि। हम कखनहुँ बखनहुँ देखैत छी जे गाँधी बसवण्णा क भाषा मे बाजि रहल छथि एवं हुनक मत कें चलैबाक प्रयास क' रहल छथि। गाँधी सर्वोदय क माध्यम सँ जे किछु प्रतिपादित तथा स्थापित करबाक प्रयास कैलन्हि, ओकरा बसवण्णा 'कायक' क माध्यम सँ स्थापित क' लेने छलाह। ई स्पष्ट कहल जा सकैछ जे बसवण्णा क 'कायक' गाँधी क 'सर्वोदय' क सारतत्त्व थिक।

सार रूप मे ई कहल जा सकैछ जे कायक पारम्परिक वर्ण वा जाति क धर्मतन्त्र क जड़ि काटि दैत अछि एवं स्वयं मे समस्त मनुष्य क बीच क समानता एवं ओकर गरिमा तथा ओकर श्रम क महत्त्व कें मूर्त करैत अछि। ई प्रजा-तान्त्रिक सिद्धान्त क अनुरूप अछि; एकर लक्ष्य कार्य एवं संपत्ति क सम्यक वितरण सेहो अछि। बसवेश्वर द्वारा परिकल्पित समाज मे भिक्षावृत्ति एवं निष्क्रियता क लेल कोनो स्थान नहि छलैक।

एकरा समाज क कायक प्रणाली कहल जा सकैत अछि। एतय प्रत्येक व्यक्ति अपन शरीर, मन एवं हृदय क आवश्यकता सभ कें पूर्ण करबाक लेल

काज करैत अछि, जकर अर्थ भेल मनुष्य क आन्तरिक क्षमता क सर्वांगीण विकास। एहि मे शोषण क कोनो रूप मे, चाहे ओ आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक वा केहनो हो, सहन नहि कैल जा सकैछ। प्रत्येक व्यक्ति अपन सामर्थ्य क अनुसार कार्य करैत अछि तथा अपन व्यवसाय क प्राप्ति समाज कें अर्पित क' दैत अछि। एहि ठाम कतहु लाभ नहि छैक एवं तें कृत्रिम अभाव नहि छैक, सामाजिक अन्याय नहि छैक तथा सामाजिक क्रूरता वा अत्याचार सेहो नहि छैक। जीवन क समस्त पक्ष मे अछूत सहित सभ मनुष्य क लेल अवसर क समानता उपलब्ध छैक। प्रत्येक स्त्री वा पुरुष विना कोनो मध्यस्थताक क अपन व्यक्तिगत प्रयत्न सँ आध्यात्मिक अनुसरण क माध्यमें अपन मुक्ति खोजि सकैछ। एही लेल मन्दिर वा पंडागिरी क चारू दिसि केन्द्रित अन्ध-विश्वास एवं रूढ़ि एतय नहि छैक। कार्य तथा पूजन त्रिपर्क्षीय दसोहा अर्थात् गुरु, लिंग और जंगम कें समर्पित करबा मे अभिन्न रूप सँ अनुप्राणित अछि एवं संगहि संग धन-लोलुपताक अभिप्राय कें परिष्कृत क' कए आध्यात्मिक अभिप्राय बना दैत अछि। ई कोनो स्वप्नद्रष्टा दार्शनिक क आदर्श लोक नहि थिक। अपितु एक कर्मशील मनुष्यक और नवयुगक एक भगवद्दूत क दर्शन थिक।

कायक क ई संदेश युग-व्यापी धार्मिक अन्धविश्वास सँ जनता क उद्धार कैलक एवं ओकरा आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, स्वातन्त्र्य एवं स्वातन्त्र-चिंतन मे पुनः संलग्न क' देलक। यदि एकरा समुचित परिप्रेक्ष्य मे जानि लेल जाय तें ई एक नव प्रकाश द' सकैछ एवं हमारा सभक वैज्ञानिक युग क समस्या सभक समाधान क मार्ग प्रशस्त क' सकैत अछि।

5

एक महान कवि

"महान मनुष्य दुर्लभ छथि, महान कवि दुर्लभतर, मुदा एक महान मनुष्य जे महान कवि सेहो होथि दुर्लभतम छथि।" ई एक विख्यात कथन थिक। वसव एक महान व्यक्ति एवं महान कविक दुर्लभतम संयोग छथि। ओ एक महान मनुष्य छथि जनिका मे एक रहस्यवादी, एक समाज सुधारक एवं स्वतन्त्र विचारक एवं नवयुगक एक भगवद्दूत घुलि-मिलि गेलाह। हुनक प्रमुख प्रयोजन साहित्यिक रचना करबाक नहि, अपितु जीवन क उच्चतम उद्देश्य क उपलब्धि तथा साधारण जन क सर्वोत्तम कल्याण क पथ प्रशस्त करबाक छलन्हि।

हुनक सभ सँ पैघ अवदान ई छल जे ओ जनता क मध्य शाश्वत सत्य एवं आदर्श सभक प्रचार कैलन्हि एवं ईश्वरीय संदेश कें प्रत्येक गृह तथा हृदय धरि पहुँचौलन्हि। अतएव ओहि प्रत्येक अनुभूति वा विचार कें जे हुनक मस्तिष्क कें प्रेरित कैलक, बुद्धि कें उत्तेजित एवं हृदय मे विकसित कैलक तकरा ओ साधारण मुदा सशक्त वचन मे अभिव्यक्त कैलन्हि।

वास्तव मे बारहम शताब्दी क सभ शरण लोकनि जे वचन लिखलन्हि अपना दृष्टि मे हृयैह लक्ष्य रखैत छलाह। ओ समाज क दोष एवं त्रुटि सभ तथा अपन आध्यात्मिक अनुभव एवं विचार सभ कें एहन भाषा मे अभिव्यक्ति प्रदान करबाक अभिलाषी छलाह जे सभक लेल सरलता पूर्वक बोधगम्य हो। अपन उच्चतम सामाजिक कल्याण क उद्देश्य सिद्ध करबाक लेल हुनका सभकें एक सर्वथा नवीन विधा अपनावै पड़लन्हि। एहि प्रयास मे हुनक कहल गेल शब्द 'वचन' बनि गेल। ई आयल एक निश्चल (स्थिर) जलकुंड मे एक विशाल वाढ़िक प्रवाह जकाँ जाहि सँ कन्नड़ साहित्यक प्रवृत्ति बदलि गेल।

'एन इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी आफ लिटरेचर' मे डब्ल्यू. एच. हडसन कहैत छथि, "साहित्य मूलतः भाषा क माध्यमे जीवन क एक अभिव्यक्ति थिक।" ई कथन 'वचन साहित्य' पर सामान्यतः प्रयुक्त भ' सकैछ एवं बसवण्णा क वचन सभ पर तँ विशेष रूप सँ प्रयुक्त भ' सकैछ। ओ जीवन कें नीक जकाँ विभिन्न

कोण सँ देखने छलाह—भौतिक स्तरक सामान्य संघर्ष सँ प्रारम्भ कए अलौकिक अनुभव क उच्चतम स्तर धरि। ओ तथ्य सभ मे गम्भीर रूप सँ प्रवेश क' सकलाह कियैक तँ ओ कविसुलभ महान अतर्दृष्टि सं सम्पन्न एक प्रवीण प्रेक्षक छलाह। हुनक उच्चतम प्रतिभा कें --जे सम्पूर्ण पर्यवेक्षण एवं नाना प्रकारक अनुभव सँ समृद्ध छल—वचन सभ क रूप मे अभिव्यक्ति भेटल अछि।

वचन क शाब्दिक अर्थ थिक गद्य। मुदा अभिव्यक्ति क माध्यम वनि कए ओ नव आयाम प्राप्त क' लेने अछि। कन्नड़ साहित्य मे ई एक अदभुत नव शैली प्रारम्भ क' देने छथि। शरण लोकनि द्वारा रचित वचन गद्य रूप मे अछि। मुदा ओकर स्वर कविता सँ प्रेरित स्तर अछि। ओकरा संक्षिप्त गद्यगीत कहल जा सकैत अछि। ओहि मे कविताक गीतात्मक लालित्य और गद्यक लयवद्ध स्फुरण दुनू अछि यद्यपि वचन सभ मे छन्द तथा लय सम्बन्धी कोनो औपचारिक नियम नहि छल। मुदा ओहि मे ओकर अपन एक लय अछि जे एक घाती अछि एवं कखनहुँ-कखनहुं अमात्रिक सेहो। मुदा कोनो-कोनो वचन तँ वैचारिकता एवं भावनात्मकता द्वारें उद्रेकपूर्ण भ' जाइछ।

तत्त्व मीमांसा प्रतिपादित करै वला और विस्तृत वर्णन करै वला वचन सभ कें छोड़ि सामान्यत: वचन संक्षिप्त होइत अछि एवं प्रत्येक वचन क अन्त मे शरण लोकनिक व्यक्तिगत देवता क समक्ष अपन समर्पण क मुद्रा अंकित रहैत अछि यथा वसवण्णा क वचन मे कूडल संगम देव, अल्लम प्रभु क वचन मे गुहेश्वर तथा अक्का महादेवी क वचन मे चेन्न मलिकार्जुन।

वसवण्णा वचन-साहित्यक जनक नहि थिकाह। हुनक पूर्व देवर दासिमय्या परिपक्व रूपक तथा शक्ति क अनेक वचन क रचना कैने छलाह। हुनका कम सँ कम वसवण्णा क वरिष्ठ समकालीन मानल जा सकैत अछि। वर्त्तमान समय मे ई सामान्यत: स्वीकार कैल जाइत अछि जे दासिमय्या कें प्रथम वचनकार वा वचन सभक रचयिताक रूपें ल' लेल जाय यद्यपि संभावना छैक जे वचन क आरम्भ किछु और पहिने भेल। एहि वचन मे ओहि समय मे एक नव उत्साह एवं जीवन शक्ति क संचार भेल जखन ओ असंख्य वीर शैव संत स्त्री-पुरुष लोकनि एकरा वसवण्णा द्वारा प्रारम्भ कैल गेल धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति मे भाग लैत अपन अभिव्यक्तिक माध्यम रूपें चुनलन्हि।

मुदा वचन साहित्य क क्षेत्र मे वसवण्णा क वर्चस्व पर सन्देह नहि कैल जा सकैछ। ओ एहि साहित्यक विधा कें पुष्ट तथा समृद्ध कैलन्हि एवं एकरा सार्व-भौम साहित्यिक उच्चता धरि पहुँचा देलन्हि। हुनक वचन दुर्लभ रहस्यवादी अनुभवक आभा, उत्तम अलौकिक ध्यान क अन्तर्दृष्टि एवं हृदयद्रावक भक्ति क प्रबलताक स्वत: स्फूर्त उद्गार थिक जे संक्षेप मे ऐहिक एव पारलौकिक जीवन कें समृद्ध एवं पुष्ट करैत अछि। वसवण्णा मे अपन पाठक लोकनिक हृदय धरि

अपन व्यापक अनुभव के पहुँचैवाक असाधारण शक्ति छन्हि। प्रतिमा एवं बिंब, उपमा तथा रूपक, विम्ब-विधान तथा शब्द-चित्रण एवं उदाहरण लोक प्रसिद्ध उक्ति सभ एवं जन समुदाय क भाषाक अगणित अंश, सभटा हुनक विशाल अनुभव एवं हुनक मानवीय अनुकम्पा मात्र नहि, अपितु वैलात्मक उपलब्धि क जीवित साक्षी सेहो थिक।

ओ ओहि कृत्रिम पार्थक्य के हटैवा मे सफल भेलाह जे प्राचीन कन्नड़ कविता क साहित्यिक भाषा तथा जन साधारण क बोल चाल क भाषा क मध्य बढ़ि गेल छल। ओ अपन समृद्ध अनुभव, अन्तर्दृष्टि तथा महान आध्यात्मिक सिद्धि कें एक बड़ साधारण, मुदा प्रभावशाली भाषा मे प्रतिष्ठापित क' देलन्हि। ई कार्य कन्नड़ साहित्यिक रूपरेखा तथा अन्तर्वस्तु मे एक महान क्रान्ति उत्पन्न क' देलक।

हुनक वचन हुनक हृदय सँ स्वतःस्फूर्त निःसृत होइत छन्हि एवं वचन सभक भाषा प्रयत्नहीन सरलता तथा गरिमा क संग प्रवाहित होइत अछि। हुनक वचन सभ मे काव्यालंकार सेहो कोनो सोद्देश्य प्रयत्न क कारणें नहि, अपितु सरलता तथा मर्यादा क संग प्रकट होइछ। हुनक अनुभव क अभिव्यक्ति क लेल ई वचन अपरिहार्य साधनक रूप मे स्वतः प्रवर्तित एवं अनिवार्य अछि। पिंडार कहताह जे एहिठाम शब्द विचार क बन्धु अछि। एहि विषय मे शरण लोकनिक मध्य सेहो अल्लम प्रभु तथा अक्का महादेवी सन बहुत अल्पे शरण तथा कखनहुँ-कखनहुँ चेन्न-बसवण्णा सिद्धराम एवं किछु अन्य दोसर हुनक उच्चता धरि पहुंचि सकलाह अछि।

निम्नांकित वचन ओहि विभिन्न स्तरक एक सुन्दर चित्रण थिक जाहि सँ बसवण्णा क वचन सम्बन्ध रखैछ :

यदि अहाँ बजैत छी त' अहाँक शब्द सभ कें
मोती हैवाक चाही जे एक सूत्र मे गाँथल हो।
यदि अहाँ बजैत छी त' अहाँक शब्द सभ कें
माणिक सँ बहराइत कांति जकाँ हैवाक चाही।
यदि अहाँ बजैत छी त अहाँक शब्द सभ मे
आकाश-विभाजक पारदर्शी दमक हैवाक चाही।
यदि अहाँ बजैत छी त महान भगवान अवश्य कहथि
जे हँ हँ ई सभिपहुँ सत्य थिक।
मुदा अहाँक शब्द सँ यदि अहाँक कृति भिन्न अछि
तखन की कूडल संगम अहाँक परवाहि करताह ?

एहि ठाम एक प्रकार सँ ओ अपन वचन सभक सार स्वयं व्यंजित क' देने छथि। ई रुचिकर अछि जे उपमा मोती क विशेषता सँ विकसित होइत आत्म-

सिद्धि क आध्यात्मिक विशेषता धरि पहुँचैत अछि। अंतिम पंक्ति मे ओ कहैत छथि जे शब्द एवं कृति कें एक भ' जैवाक चाही एवं तखनहि भगवान क कृपा प्राप्त भ' सकैछ। बसवण्णा मे हमरा सभ कें शब्द एवं कृतिक सम्पूर्ण समर्थन भेटैछ। ओ अपन कार्यशक्ति एवं संगहि वाक्शक्ति कें दैवी आराधना कें अर्पित क' देने छथि तथा अपन कथन सभ मे भगवान क गौरव प्रकट कैने छथि। एहि प्रकार क एकीकरण वास्तव मे दुर्लभ अछि।

बसवण्णा कविता लिखबा मे जुटल रहै वला कवि नहि छथि। हुनका प्रकृति-सौन्दर्य क वर्णन करब सेहो अभीष्ट नहि छन्हि। हुनक कविता जीवन क कविता थिक। जीवन क सौन्दर्य स्वतः हुनक शब्द सभ मे काव्य बनि गेल अछि। ओ अन्तरात्मा क सौन्दर्यक वर्णन कैने छथि। हुनक वचन सभ मे हमरा लोकनि कें ओहि यात्राक समस्त भिन्न-भिन्न शिविर भेटैत अछि जे केओ जिज्ञासु प्रारम्भ करैत अछि। सांसारिक जीवन क सीमा एवं ओकर व्यर्थता, मनक भंगुरता एवं ओकर निकृष्टता, पाखंडपूर्ण भक्ति और तथाकथित धार्मिक लोक सभ क कपटपूर्ण व्यवहार एवं एक दिसि हृदय क पवित्रता, उच्चकोटिक भक्ति तथा शरण सभक महत्ता, एहि सबकें ओ मानव-जीवन क आदर्श भाव-भूमि क सन्दर्भ मे गम्भीर विचार तथा कलात्मक अभिव्यक्ति देने छथि।

सांसारिक जीवन क सीमा एवं भंगुरता क विषय मे हुनक द्वारा कहल गेल शब्द एतेक सशक्त अछि जे पाठक क मस्तिष्क आत्मनिरीक्षण क दिसि उन्मुख भ' जाइछ। स्वयं कें केन्द्र बनबैत ओ अपन वचन सभ मे एक प्रशंसनीय कोटिक आत्मज्ञान तथा आत्मान्वेषण प्रदर्शित कैने छथि। अपन एक वचन मे ओ कहैत छथि—

हमर जीवन ओहि मूस जकाँ अछि,
जे गेठिया सभक ढेरी पर चढ़ल बैसल अछि,
जावत धरि मरि नहि जाइछ ओहि सँ
मुक्ति नहि।

ओ ओहि मूसक उपमा क प्रयोग करैत छथि जे गेठिया सभक ढेरी पर विराजमान हो। ई हमरा लोकनिक हृदय मे सोझे प्रवेश करैत अछि एवं हमरा सभकें बुझबैत छथि जे हम एक मूस सँ कोनहुँ प्रकारे उत्तम नहि छी। एक अन्य वचन मे ओ कहैत छथि—

हमर दशा, ओहि बेंग सन अछि,
जे साँप क छाया मे पड़ल हो,
ई बहुरंगी विश्व,
सपेरा और साँपक बीच क
सौहार्द्र सन अछि,

जखन एहि विश्व क सांप
हमरा भीतर अपन विषके व्याप्त क' देलक—
ओ एकर पंचपक्षीय वासना के लक्ष्य क' कए कहैत छथि—
तखन आगाँ डेग नहि बढ़ाओल जा सकल !

एहि प्रकारे एक सँ एक सशक्त शताधिक 'उपमा' सभ उद्धृत कैल जा सकैछ। अव्यवस्थाक अस्त-व्यस्त जीवन के प्रकट करबाक लेल ओ एहि उपमा क उपयोग करैत छथि—'चमगुदड़ीक जीवन सन' मरणशील मनुष्य लोकनि द्वारा सांसारिक जीवन क आनन्द लेबाक व्यर्थ प्रयास क दिसि संकेत करैत ओ कहैत छथि : "सांप क मुँह मे पड़ल बेंग अबैत-जाइत माछीक लेल भूख सँ लालायित होइछ।" ओ इहो कहैत छथि : "सजैबाक लेल आनल गेल ठाढ़िक पत्ता बलिदान क लेल आनल गेल पाठा खाइत अछि।" ओ मन क तुलना गुल्लरि क संग, शाखा पर बैसल वानरक संग, पालकी मे सवार कुकुर क संग एवं घी क लेल तरुवारि क तेज धार के चटैत कुकुर क संग प्रभावकारी रूप सँ करैत छथि। एहि प्रकारक उदाहरण हुनक प्रत्येक वचन मे देखल जा सकैछ।

हुनक किछु वचन हुनक आत्माक गम्भीरतम चीत्कार के उत्कृष्ट रूप सँ प्रतिध्वनित करैत अछि। उदाहरणार्थ—

हे भगवान अहाँ पसारने छी
ई हरीतिमा, इन्द्रिय, तृणमय भूमि
हमर आँखि क सम्मुख,
पशु की जनैत अछि ?
समस्त हरीतिमा और घास क दिसि आकृष्ट भ' जाइछ।
हमरा वासनामुक्त करू भगवान !
एवं पवित्रता क आहार भरि पेट करै दिय
पीबाक लेल हमरा सत्य विवेक चाही।
हमर लालन-पालन करू, हे भगवान
कूड़ल संगम।

निम्नांकित वचन मन क चचलता तथा दुर्बलता क एक अर्थपूर्ण अभिव्यंजक चित्र प्रस्तुत करैत अछि :

झाड़ी मे घुमैत गिरगिट जकाँ
हमर मने अछि भगवान।
औहि गिरगिट जकाँ जे प्रतिक्षण अपन रंग बदलैत अछि
हमरो मन अछि भगवान।

उड़ैत लोमड़ी क दशा मे
हमरो मन अछि भगवान।
जेना द्वार पर भोरक पौ फूटैत अछि
ओहि आन्हरक लेल जे जगैत अछि
नीरव राति मे।
की मात्र चाहनहि सँ
हुनक अकारण धर्मपरायणता प्राप्त छन्हि ?
हे कूडल संगम भगवान।

जे हमरा लोकनि देखने छी ओ ई थिक जे हुनक भाषा प्रत्येक अवसरक उपयुक्त अछि एवं ओहि अवसर तथा स्वरूप कें अभिव्यक्त करबा मे समर्थ अछि। हुनक आत्माक आध्यात्मिक लालसा क अभिव्यक्तिक कन्नड़ साहित्य क कतोक सुन्दरतम बिम्ब मे सँ अछि। एतय निम्नांकित वचन उद्धृत कैल जा सकैत अछि :

हमर मन कें पिघला दिय एवं ओकर दाग कें हटा दिय,
एकर परीक्षा लिय एवं एकरा अग्नि मे पवित्र क' दिय।
एहि पर हथौड़ा चलाउ एहि प्रकारें
जे एकर प्रहार सँ ई हमर हृदय शुद्ध सोना भ' जाय।
फेर हमरा पीटि-पीटि कए हे महान शिल्पकार !
अपन भक्त सभक पैर क लेल पैजनी बना लिय।
भगवान कूडल संगम हमर रक्षा करू।

एहि प्रकारें ओ उपयुक्त बिम्ब एवं प्रतीक वा सजीव शब्दचित्र सभक प्रयोग क माध्यमे प्रायः महान काव्यात्मक उच्चता पर पहुँचि जाइत छथि। हुनक उद्‌गार सभक सहजता तथा शान्तिदायकता अद्‌भुत अछि।

एहि तथ्य कें स्पष्ट करैत जे दुर्बल और निकृष्ट मन भक्ति क उच्चता धरि नहि पाबि सकैछ, ओ पूछैत छथि : "यदि मदिरा क पात्र पर अहाँ पवित्र भस्म मलि दत छी त यावत् धरि ओकर अन्तर पवित्र नहि छैक ओकरा के स्वच्छ क' सकैत अछि ? एवं ई सेहो : पाथर कतबो दिन धरि जल मे पड़ल रहै, की ओ सीझि कए कोमल भ' सकैत अछि ?" ओ आन्तरिक पवित्रताक आवश्यकता एवं आडम्बरशील भक्ति क व्यर्थता कें सशक्त स्वर मे प्रतिपादित करैत छथि :

अहाँ दिबड़ा क भीड़ पर प्रहार करबै त'
साँप की मरि जाएत ?
अहाँक कठोरतम प्रायश्चित्त सँ की हैत ?

भगवान कूडल संगम की हुनका लोकनि पर विश्वास करथिन्ह
जनिकर हृदय पवित्र नहि छन्हि ?

विना साँप के खोजने झाड़ी के पिटवाक कोनो उपयोग नहि छैक। जे दीपक घर क अन्धकार के नहि दूरि क' सकैछ ओकर कोन उपयोग ? ठीक एही प्रकारें पूजा क कौन उपयोग यदि ओ हृदय क अन्धकार के दूर नहि क' सकै ?

हाथी अंकुश सँ डेराइत अछि,
तथा पहाड़ वज्र सँ,
अन्हार डेराइत अछि प्रकाश सँ,
एवं जंगल घबड़ाइत अछि आगि सँ,
पाँच प्रमुख पाप
भगवान कूडल संगम क नाम सँ कँपैत अछि।

अज्ञान क तुलना एक बलवान हाथी सँ कैल गेल अछि तथा एक पहाड़ सँ एवं घोर अकर्मण्यता क अन्धकार सँ। मुदा पवित्र हृदय एवं गंभीर प्रेम क संग भगवान क नाम क आह्वान हाथी क लेल अंकुश, पहाड़ क लेल बिजली तथा अन्हारक लेल प्रकाश थिक। विम्ब क ई पुनरावृत्ति भगवान क नामक महिमा के प्रभावपूर्ण शैली मे सम्प्रेषित करैत अछि।

प्रत्येक वर्णित विषय के पाठक क हृदय धरि पहुँचैबा मे बसवण्णा अत्यधिक सफल भेल छथि। जीवन क गंभीर अनुभव, मर्मवेधी अन्तर्दृष्टि, बहुमुखी ज्ञान एवं सर्वतोमुखी प्रतिभा क फलस्वरूप हुनक कल्पना फल-फुलाएल अछि एवं एही सँ चित्र तथा विम्ब उद्बुद्ध भेल। हुनक कवित्व केवल हुनक विचार एवं उपयुक्त वाणी मे आत्मप्रकाश कएलक ततबेटा नहि, अपितु हुनक आध्यात्मिकता क अग्रगति क विभिन्न चरण के सेहो स्पष्ट कएलक। हुनक प्रतिभा प्रत्येक रंगक अभिव्यक्ति धरि पहुँचल अछि—सामाजिक विषमता और मतभेद सँ संघर्ष करै वला जिज्ञासु लोकनिक उद्गार सँ प्रारम्भ क' कए ब्रह्मानन्द क अनुभव क उल्लासपूर्ण उद्गार धरि। एहि पर अनुमानतः तीन चरण मे विचार कैल जा सकैत अछि :

अनुभव सिद्ध चेतना, निर्लिप्त चेतना तथा भावातीत चेतना।

कविता क मूल विषय बाह्य विश्व थिक। मुदा कविता क महानता क निर्णय करैत अछि ओ भावना जकरा संग एहि पर कवि अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि, एवं जकरा सँ प्रेरणा प्राप्त करैत छथि। विश्वक समस्त विभाजन एवं पार्थक्य सभक बीच बसवण्णा क काव्यात्मक प्रज्ञा स्वर्गीय उच्चता मे प्रवाहित भेल अछि, मुदा पृथ्वी क उत्थानक लेल अनुकम्पापूर्वक सदैव उतरि आयल अछि। ओ कहैत छथि—

काया पेटारी थिक और मन साँप,
देखू दुनू कोना संग-संग रहैत अछि,
साँप आ पिटारी,
अहाँ किछु नहि जनैत छी
जे ई कखन अहाँ कें मारि देत,
कखन अहाँ कें डंसि लेत,
हे भगवान कूडल संगम।
यदि हम दिन-प्रतिदिन अहाँक पूजा क' सकी
त ई सम्मोहक होएत।

साँप आ पेटारी क सुन्दर प्रतीक जिज्ञासु क अनुभूति मूलक चेतना आ ओकर ओहि पार पहुँचबाक आन्तरिक प्रवृत्ति अभिव्यक्त करैत अछि। कलात्मक अभिव्यक्ति सभक रूप मे एहन भव्य वचन सभक वसवण्णा अनुभूतिमूलक चेतना क विकास और ओकरो ओहि पार पहुँचबाक लेल उच्च सँ उच्चतर आरोहण क आग्रह व्यक्त करैत अछि।

विकास-क्रम क दोसर डेग कें निर्लिप्त चेतना कहल जा सकैछ। विविध वचन सभ मे काव्यात्मक अन्तर्बोध क माध्यमे ई विशद एवं प्रभावशाली रूप मे प्रकट भेल अछि—

कोनो सक्रिय भक्त क तन
केरा गाछक थम्ह सन अवश्य होइत अछि,
ओकरा बाहरी आवरण सँ यदि अहाँ छिलका-छिलका उतारि देबैक
त भीतर गुद्दा नहि रहतैक।
हमर अपने लोक गिड़ि लेने अछि
उत्तम फल एवं संग मे बीआ सेहो,
भगवान कूडल संगम जानि लिय
हमरा आब पुनर्जन्म नहि प्राप्त हो।

ओ ई संकेत दैत छथि जे कर्म अनासक्ति क भावना सँ सम्पादित हैबाक चाही।

ओ कहैत छथि जे हमरा सभ के संसार (सांसारिक जीवन) क मध्य रहबाक चाही और संगहि जिज्ञासु सेहो हैबाक चाही। हमरा लोकनि कें एहि संसार सँ पड़ैबाक आवश्यकता नहि अछि। चाहे जाहि कोनो जीवन पथ पर रही, हमरा लोकनि कें पूर्ण अनासक्ति क भावना प्राप्त करबाक अछि जे मात्र प्रबुद्ध कर्म अर्थात् कायक द्वारा सम्भव अछि। एहि बिम्ब मे ई बात ओ प्रभावशाली रूप मे प्रस्तुत करैत छथि : आकाश मे उड़ै वला गुड्डी मे सेहो नियंत्रण क डोरि अनिवार्य होइत छैक। वीर नायक सेहो काज करथि। कोनो गाड़ी की धरातल कें छोड़ि

चलि सकैछ ? हमरा एक गुड्डी जकाँ उड़बाक अछि। मुदा संसार क नियंत्रणक डोरि और समुचित अनुशासन सँ संपर्क सेहो अवश्य रखबाक अछि। मात्र तखने बसवण्णा जकाँ ई कहब संभव अछि :—

ई नश्वर संसार और किछु नहि निर्माता क टकसार थिक,
जे लोक एतय पुण्य अर्जित करैछ ओतय सेहो अर्जित करैछ
और जे एतय अर्जन नहि करैछ, हे भगवान कूडल संगम,
ओतहु नहि करछ।

ई एक व्यंजनापूर्ण सुन्दर प्रतीक अछि।

एहि प्रकार क पूर्ण अनासक्ति प्राप्त कए लेबाक उपरान्त कोनो जिज्ञासु, चेतना क समस्त निम्न स्तर पार कए लेत तथा 'समरस प्रज्ञा' वा 'भावातीत चेतना' क ओहि अन्तिम उच्चता पर पहुँचत जकर अनुभूति लिंग तथा अंग क अभिन्न एकता क फलस्वरूप होइछ। एकता क महत्ता पर हुनके किछु वचन हमरा लोकनि एकरा पूर्व पढ़ि चुकल छी। हमरा लोकनि स्मरण क' सकैत छी जे भक्ति क भूमि सँ उपजल हुनक जीवन क फल कोन प्रकारें कूडल संगम कें समर्पित कैल गेल छल। अपवित्रता क त्रिविध प्रणाली कें नष्ट क' कए ओ नीरवता मे ओहिना डूबि गेलाह जेना प्रकाश महाप्रकाश में विलीन भ' जाइछ। एक और वचन एहि प्रकार अछि :—

हमरा सभक महान भगवान कूडल संगम क छवि सँ
आँखि अधा जैबाक पश्चात् देखबाक लेल शेष --
किछु नहि रहैछ,
हुनक स्वर सँ कान परिपूर्ण भ' जैबाक उपरान्त
सुनबाक लेल किछु नहि रहि जाइछ,
हुनक कृपा सँ हाथ भरि जैबाक उपरान्त
आराधना क लेल किछु नहि रहि जाइछ,
हुनक ध्यान सँ जखन हृदय भरि जाइछ,
चिन्तन क लेल किछु नहि रहैछ।

देखबाक, सुनबाक एवं पूजा करबा पर कोनो साधारण जन क शारीरिक अभिव्यक्ति क दृष्टिकोण सँ, कोनो कवि क अन्तर्दर्शी अभिव्यक्ति क दृष्टिकोण सँ और रहस्यवादी क नैसर्गिक अभिव्यक्ति क दृष्टिकोण सँ विचार कैल जा सकैत अछि। जखन चारु दिसि सँ नैसर्गिक स्पर्श क अनुभूति होइछ, तखन आँखि, कान, मन सभ ओहि अनुभव सँ ऊपर धरि भरि जाइछ।

एक वचन आरो अछि जाहि मे ओ एहि नैसर्गिक घनिष्ठता कें एहि प्रकारें व्यक्त कैने छथि।

वर्तमान कोनो महानतम सँ
महान हम छी ।
असीम क संग सँ स्वयं असीम
हम शब्दे कोना व्यक्त करब
जे हम उदात्त प्रकाश मे छी
हे प्रभु कूडल संगम
तखन की हम मूक भ' गेल छलहुँ ?

ओ अपन एक आन वचन मे कहैत छथि, प्रकाश प्रकाश क सिंहासन वनि जाइत अछि, प्रकाश प्रकाश मे मिलि जाइत अछि । एहि प्रकारें बसवण्णा एतेक गूढ़ एवं सूक्ष्म विचार एवं अनुभव कें सरल-सहज, मुदा एहन सशक्त एवं सांकेतिक शब्द मे अभिव्यक्त क' सकैत छथि जाहि सँ जीवन-दर्शन मूर्त और सम्प्रेषित भ' जाय ।

बसव क वचन सभ कें पढ़ि अरविन्द क कविता-विषयक कथन क सत्यता हमरा सभ कें हृदयंगम भ' जाइछ । ओ कहैत छथि : "कविता चेतना क उच्चतर स्तर क सत्य कें निम्नस्तर क भाषा मे अनूदित करैत अछि ।" बसवण्णा चेतना क सभ स्तरक सत्य कें जन-साधारण क भाषा मे अनूदित कैने छथि । हुनक वचन सभ मे ओ सभ अनुभूति एवं स्तर समाविष्ट अछि जाहि सँ हमरा लोकनिक जीवन उन्नत एवं अभिजात भ' सकैछ । हुनक उपलब्ध उच्च स्तर, आध्यात्मिक आदर्श, जीवन-दर्शन, हुनका द्वारा अपनाओल पथ एवं हुनक द्वारा आरोहित शिखर रूप हुनक वचन मे उत्कृष्ट रूपें अभिव्यक्त भेल अछि ।

जनसाधारण क संग हुनक घनिष्ठता हुनक भाषा कें लोकशक्ति क एक अभिनव स्वाद प्रदान कैने छन्हि । ओ लोकोक्ति सभ क प्रचुर प्रयोग करैत छथि । हुनक किछु कथन स्वतः लोकोक्ति बनि गेल अछि । सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्तिकारी हैबाक अतिरिक्त ओ कन्नड़ साहित्य मे क्रान्ति लय आन-लन्हि । एकर केन्द्रस्थल मे जनता क भाषा कें आनि कए क्रान्ति उत्पन्न कैलन्हि ।

भाषा क सूक्ष्मता एवं संभाविता पर हुनक अधिकार विलक्षण एवं स्तुत्य छल । ओ शब्द-चित्र मे पारंगत छथि । अल्पतम शब्द प्रयोग कए अधिकतम चाक्षुष प्रभाव उत्पन्न क' सकैत छथि । हुनक अलंकार-विधान, हुनक शब्द एवं विम्ब सभक अर्थ-सूक्ष्मता तथा काटल-छाँटल शब्द चयन हुनक संगीत एवं चित्रण क एक संगम थिक । हुनक वचन सभ क विशिष्ट संगीतात्मक गुण क अनुवाद संभवतः नहि कैल जा सकैछ । एही अनुपात मे एतय उद्धृत वचन सभ मे हुनक मौलिक कलात्मक संगीत वृत्ति नहि आबि सकल अछि । एहि ठाम यथासंभव केवल अर्थ-वृत्ति कें यथावत रखबाक प्रयास कैल गेल अछि । एहि सीमा क संग

मूलपाठ मे उद्धृत वचन सभक भापात्मक अन्तर्वस्तु, कल्पना एवं अभिव्यक्ति क सुन्दरता कें किछु दूर धरि अनुभूत एवं साकार करव संभव अछि ।

उपसंहार मे कहल जा सकैछ जे वसवण्णा जनता क जीवन-नाड़ीये कें स्पर्श कैलन्हि, देशक साहित्यिक तथा रहस्यवादी परम्परा कें समृद्ध कैलन्हि, जनताक आकांक्षा एवं उद्देश्य कें, एक सर्वांग जीवन कें एकीकृत दर्शन क दिसि उन्मुख कैलन्हि । ओ सभ किछु प्राप्त क' लेलन्हि जे कोनो आध्यात्मिक आन्दोलन कें प्राप्त भ' सकैछ। यदि ओहि युग क किछु प्रासंगिक अपरिहार्य तत्त्व सभ कें पृथक क' देल जाय त वसवेश्वर द्वारा प्रतिपादित आदर्श सभ युग एवं समस्त भूभाग क लेल उपादेय अछि।

हम कहि सकैत छी जे आधुनिक युग क हमरा लोकनि हुनक क्रान्ति क महत्त्व कें हुनक परिलक्षित धर्म एवं समाज क स्वभाव तथा हुनक उपदेश क अनुसार हुनक आचरण कें बुझबाक लेल अधिक सक्षम छी। हुनक जीवन एवं हुनक शिक्षा, जाहि मे ओ सर्वश्रेष्ठ आधुनिक विचारक कार्ल मार्क्स तथा महात्मा गाँधी क पूर्वाभास उपस्थित कैने छलाह, शक्तिशाली प्रकाश-स्तम्भ जकाँ चमकैत अछि तथा सम्पूर्णता क खोज मे मानव जातिक मार्ग-दर्शन करैत अछि। ई प्रकाश-स्तम्भ अपन दीप्ततम किरण समूह क माध्यमें निकट आबै वला समस्त लोक सभक जीवन कें आलोकित करैत अछि ।

चुनल ग्रन्थ-सूची

कन्नड़ साहित्य (प्राचीन)

(1) अक्कन वचनगलु, सं. ल. वसवरजु (1966)
(2) अल्लामन वचन चन्द्रिके, सं. ल. वसवरजु (1966)
(3) वसव पुराण, सं. आर. सी. हीरेमथ (1958)
(4) वसवण्णवर वचनगुल, सं. एस. एस. वसवानल
(5) वासवराज देवर रागाले, सं. टी. एस. वेंकन्नय्या (1965)
(6) चन्नवसवन्नवर वचनगुल, सं. आर. सी. हीरेमथ (1965)
(7) देवर दासीमय्यन वचनगलु, सं. एल. वसवरनजु (1970)
(8) लिंगलीलाविलास चरित्र, एस. एस. भूसनर मठ (1956)
(9) मोल्लिगेय मारय्या मत्तु रानी महादेविया वचनगलु, सं. चन्नप्पा उत्तंगी तथा एस. एस. भूसनर मठ (1950)
(10) शिवदास गीतांजलि, सं. एल. वासवराजु (1963)
(11) शून्यसम्पादने, सं. एस. एस. भूसनर मठ (1958)

कन्नड़ साहित्य (आधुनिक)

(12) चिन्तामणि हालेपेट, युगप्रवर्त्तक बसवन्नवरू (1944)
(13) गुंजल एस. आर., वसव साहित्य दर्पण (1967)
(14) जावालि बी. सी., धर्म भंडारी बसवन्नवरू
(15) मोल्लन गौडा, पाटिल, श्रीवसवेश्वर मेले होसबेलाकू (1966)
(16) श्रीनिवास मूर्ति एम. आर., भक्ति भंडारी बसवन्नवरू (1931)
(17) वचन धर्मसार (1946)

अंग्रेजी साहित्य

(1) एलवर्ट को, जार्ज, रिलीजन ऑफ मैच्योर माइंड
(2) ऐण्ड्रू लैंग, मेकिंग ऑफ रिलीजन

(3) अरविन्द, सिंथेसिस ऑफ योग
(4) काइर्ड जान, एन इण्ट्रोडक्शन ऑफ फिलोसफी ऑफ रिलीजन
(5) दासगुप्ता एस. एन., रिलीजन एण्ड रैशनल आउटलुक
(6) देसाई पी. बी., बसवेश्वर एण्ड हिज टाइम्स
(7) देवीरप्पा एच., (सं.) वचन ऑफ वसवण्णा
(8) गजेन्द्रगवकर के. वी., नियो-उपनिषदिक फिलोसोफी
(9) हिरियन्ना एम., आउट लाइंस ऑफ इण्डियन फिलोसोफी
(10) वैह क्वेस्ट आफटर पर्फेशन
(11) हुनशल एस. एम. लिंगायत मूवमेंट
(12) जेम्स विलियम्स, द वैराइटीज ऑफ रिलीजस एक्सपीरियंस
(13) काने पी. वी., हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र
(14) नन्दी मठ एस. सी., हैण्ड बुक ऑफ वीरशैविज्म
(15) राधाकृष्णन ऐस., ऐन आइडियलिस्ट व्यू ऑफ लाइफ
(16) वैह, सोसाइटी एण्ड रिलीजन
(17) रोमानेस, थाट्स ऑन रिलीजन
(18) रुद्रप्पा जे., काश्मीर शैविज्म
(19) सखारे एम. आर., लिंगधारण चन्द्रिका
(20) टैगोर, रवीन्द्रनाथ, द रिलीजन ऑफ मैन
(21) विल डुराण्ट, प्लेजर्स ऑफ फिलोसोफी
(22) वोडेयर एस. एस. (सं.) श्री बसवेश्वर

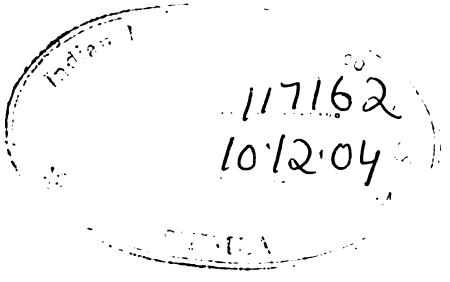

बसवेश्वर, जे बसवण्णा सेहो कहबै छथि, भारतवर्ष क महानतम आध्यात्मिक नेता सब मे सँ अन्यतम छथि। बसवण्णा क्रान्तिकारी सन्त, कन्नड़ भाषा क महान् कवि, प्रख्यात रहस्यवादी, महान् समाज-सुधारक एवं कर्नाटक क नवयुग क स्रष्टा क रूप मे ख्यात छथि।

सन् 1131 क आस-पास सम्पन्न ब्राह्मण परिवार मे जन्म ल' कए सन्त बसवेश्वर वेद, उपनिषद्, पुराण तथा एही प्रकार क अन्यान्य ग्रन्थ सभ क अध्ययन कैलन्हि। किन्तु ओ आजीवन जाति भेद क उन्मूलन क लेल संघर्ष करैत रहलाह। ओ सामान्य जन एवं उपेक्षित वर्ग कें आध्यात्मिक सिद्धि क नैसर्गिक शिखर धरि पहुँचौलन्हि। बसवेश्वर क समाजोन्मुख धार्मिक संस्थान 'अनुभव मंडप' देशक विभिन्न क्षेत्र सँ आयल अनेक आध्यात्मिक अभ्यर्थी लोकनिक लेल प्रेरणा-स्रोत छल।

'वचन' क शाब्दिक अर्थ गद्य होइछ, किन्तु बसवेश्वर क द्वारा ई एक नवीन शक्ति अर्जित कैलक। ओ कन्नड़ साहित्य क शिल्प एवं भाव दुनू क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न कैलन्हि। हनक कविता जीवन क कविता थीक। अकादेम

Library IIAS, Shimla
MT 891.481 415 B 29 T
00117162

क एक संग्रह कन्नड़ में प्रकाशित

कन्नड़ भाषा क साहित्यकार डॉ. एच. थिप्पेरुद्रस्वामी एहि रुचिकर लघु प्रबन्ध मे बसवेश्वर क बहुमुखी व्यक्तित्व क वर्णन कैने छथि।

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00